श्री मंशापूर्ण महावीर विधान

दिगम्बराचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलम्।।
श्री धरसेनाचार्य देव पुष्पदन्त एवं भूतबलि मुनिवरों
को षट्खण्डागम का उपदेश देते हुए।

श्री मंशापूर्ण महावीर विधान

श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर भगवान

गंगनहर, मुरादनगर (उ.प्र.)

रचयिता

दिगम्बर जैनाचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी

कृति : **श्री मंशापूर्ण महावीर विधान**

शुभाशीष : पुष्पगिरि प्रणेता परम पूज्य
गणाचार्य श्री 108 पुष्पदंतसागर जी महाराज

कृतिकार : परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज

संस्करण : अष्टम्, दिसम्बर 2025 (1000 प्रतियां)

प्रकाशक : सौरभाँचल प्रकाशन (क्र. 115)

प्राप्ति स्थल :
1. **श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र,**
   पुष्पगिरि, सोनकच्छ, जिला देवास (म.प्र.)
   फोन : 07270-22870
2. **श्री दिगम्बर जैन तीर्थ सौरभाँचल,**
   श्री श्रुत स्कन्ध मन्दिर,
   जी.टी. करनाल रोड, गन्नौर (हरियाणा)
3. **श्री मंशापूर्ण महावीर क्षेत्र,**
   जीवन आशा हॉस्पिटल,
   कावड़ मार्ग, गंगनहर, मुरादनगर (उ.प्र.)

पुण्यार्जक : **अजय कुमार जैन - सुदेश जैन**
रोहित जैन - स्पर्शी जैन
अविका जैन, अंचित जैन
जिनवाणी एन्टरप्राईजेज
"जिनवाणी भवन"
बी-291, ट्रांसपोर्ट नगर, सहारनपुर (उ.प्र.)

मूल्य : 50/- (पुनः प्रकाशन हेतु)

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली
मो.: 9811374961, 9811363613
pkjainparas@gmail.com, kavijain1982@gmail.com

आवरण पृष्ठ : भूगर्भ से प्राप्त 1200 वर्ष प्राचीन मंशापूर्ण भगवान महावीर स्वामी की पावन प्रतिमा है।

"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो" एक ऐतिहासिक सत्य

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

जैन धर्म में देव शास्त्र गुरु के प्रति श्रद्धा ही सम्यग्दर्शन में कारण है। चौबीस तीर्थंकर एवं 1452 गणधर तथा द्वादशांगमय श्रुतज्ञान होने के उपरांत भी वर्तमान काल में तीर्थंकर महावीर स्वामी का शासन काल होने के कारण मंगल स्वरूप वे ही हैं इसलिए **"मंगलं भगवान् वीरो"** कहकर **"दीपावली पर्व"** को महत्व दिया जाता है तथा उनके प्रथम गणधर गौतम स्वामी की दीक्षा की स्मृति को **"मंगलं गौतमो गणी"** कहकर **"गुरु पूर्णिमा"** के रूप में महत्व दिया जाता है तथा 633 वर्ष बीतने के उपरांत श्रुत विच्छेद न हो जाये इसलिए मंत्र ज्ञाता धरसेनाचार्य ने अपना अंग श्रुतज्ञान आचार्य पुष्पदंत स्वामी को समर्पित किया और कहा भी है–

जयउ धरसेण णाहो जेण महाकम्म पयडि पाहुड सेलो।
बुद्धि सिरेणुद्धरियो समप्पियो पुप्फदंतस्स।।

(ध.पु.भा.-2)

अर्थात् वे धरसेन स्वामी जयवंत हों, जिन्होंने **महाकर्मप्रकृति** प्राभृत रूपी पर्वत को अपनी बुद्धिरूपी मस्तक पर धारण करके **आचार्य पुष्पदंत** को समर्पित किया।

उनसे शिक्षित शिष्य **आचार्य पुष्पदंत** ने **सर्वप्रथम णमोकार मंत्र** को निवद्ध मंगल कर षट्खण्डागम ग्रन्थ लिखना प्रारंभ किया एवं गणधर वलय मंत्र के साथ स्वामी भूतबलि आचार्य ने ग्रन्थ पूर्ण किया। इस उपलक्ष्य में **"श्रुतपंचमी"** पर्व मनाया जाता है यही ऐतिहासिक सत्य है इसलिए शुद्ध ग्रन्थ के प्रथम लेखक के रूप में **ऋषि सभा के अधिपति आचार्य पुष्पदंत स्वामी** का स्मरण करते हुए **"मंगलं पुष्पदन्ताद्यो"** कहा जाता है।

ये तीनों ही जैनधर्म के उत्कृष्ट मंगल स्वरूप हैं। इसलिए धवलाकार वीरसेन स्वामी ने कहा–

"तदो मूलतंत कत्ता वढ्ढमाण भडारयो, अणुतंत कत्ता गौदम स्वामी उवतंत कत्तारा भूदबली पुप्फदंतादयो वीयराय दोष मोहा मुणिवरा"

(ध.पु.भा.-1, पृ:73)

अर्थात् मूलग्रंथ कर्ता वर्द्धमान भट्टारक अणुतंत कर्ता गौतम स्वामी, उपतंत ग्रंथ कर्ता भूतबलि पुष्पदंतादि, वीतराग दोष मोह रहित मुनिवर हैं।

इसे ही शुद्ध दिगम्बर आगम प्रमाणानुसार निम्न श्लोक के रूप में कहा जाता है–

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदन्ताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलम् गौतममोगणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं।।

श्री मंशापूर्ण महावीर जिनालय - एक परिचय

परम तपस्वी, ज्ञानयोगी, संस्कार प्रणेता, वात्सल्य मूर्ति, जीवन आशा हॉस्पिटल प्रेरणा स्रोत परम पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज की प्रेरणा से निर्मित श्री दिगम्बर जैन मंशापूर्ण महावीर जिनालय एवं जीवन आशा हॉस्पिटल जैन धर्म के परम लक्ष्य प्राणीमात्र का कल्याण और भगवान महावीर के सन्देश **जियो और जीने दो** को पूर्णतः सार्थक करता है। गंगनहर के तट पर स्थित यह जिनालय राष्ट्र की एक अनुपम कृति है। जो लाल पाषाण से निर्मित भारतीय देवशिल्प और वास्तु के उच्च मापदंडो के अनुसार निर्मित है एवं पूर्णतः लौह विहिन है। इसमे 27 नक्षत्रों के अनुसार 27 सोपानो का निर्माण किया गया है। पिरामिडाकार पद्म पुष्प पर सुशोभित इस जिनालय की नींव में 20400 घनफुट पाषाण का प्रयोग किया गया है। मुख्य वेदी, गर्भगृह एवं 108 सिंहपीठ को आच्छादित, उत्तरमुखी जिन मन्दिर सभी के आकर्षण का केन्द्र है।

इस अद्वितीय एवं मनोहारी जिनालय में 1200 वर्ष प्राचीन भूगर्भ से प्राप्त 24वें तीर्थकर, वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी की मनोहारी, सबका दुःख दूर करने वाली, सबकी मनोकामना पूर्ण करने वाली अतिशयकारी मंशापूर्ण भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा विराजमान है। श्री मन्दिर जी का निर्माण 30000 वर्ग गज भूमि पर किया गया है। गर्भगृह सहित मंडप, महामंडप के कलात्मक प्रत्येक स्तंभ और उन पर की गई नक्काशी जैन वास्तु एवं शिल्प का अनूठा उदाहरण है। जिनालय में भगवान महावीर के 34 पूर्वभवों के साथ उनके जन्म से निर्वाण तक की गाथा चित्रित की गई है। भगवान महावीर के गणधर गौतम स्वामी और आचार्य धरसेन के शिष्य आचार्य पुष्पदंत स्वामी द्वारा रचित आगमग्रन्थ षटखंडागम के 177 सूत्रों को श्वेत पाषाण पर स्वर्णाक्षरों से अंकित कर चिर-स्थायी बनाया गया है।

यहां आचार्य पुष्पदन्त स्वामी द्वारा लिपिबद्ध महामंत्र णमोकार को 18

भाषाओं में उत्कीर्ण किया गया है यहा विशाल संत निवास, मीटिंग हॉल, आगंतुक यात्रियों के लिए अतिथि निवास एवं भोजन व्यवस्था भी है।

अतिशयकारी श्री मंशापूर्ण महावीर तीर्थ क्षेत्र पर प्रतिमाह भक्तों द्वारा **"श्री मंशापूर्ण महावीर विधान"** का भी आयोजन होता है यहां महावीर जयंती, दीपावली एवं 20 मई (जीवन आशा हॉस्पिटल का स्थापना दिवस) को मूलनायक श्री 1008 मंशापूर्ण महावीर स्वामी का त्रयामृत (जल, दूध, केसर) मस्तकाभिषेक किया जाता है।

यहां **"होवे सारी प्रजा को सुख"** की कामना से एक विकलांग हॉस्पिटल एवं पुनर्वास केंद्र की भी स्थापना की गई है जहां लोगों को निशुल्क कृत्रिम अंग एवं योग्यता के आधार पर रोजगार प्रदान कर सेवा का कार्य किया जा रहा है।

वर्तमान में जीवन आशा हॉस्पिटल मे अनुभवी डॉक्टर एवं स्टॉफ के द्वारा सेवाएं प्रदान कर डायलिसिस,सामान्य चिकित्सा, आंख रोग, हड्डी रोग, नाक कान गला रोग, एक्यूपंक्चर, स्पीच थेरेपी एंड ऑडियोलॉजी, पैथोलॉजी लैब, एक्सरे एवं डायग्नोस्टिक सेंटर, फिजियोथैरेपी सेंटर, सीटी स्केन, अल्ट्रासॉउन्ड,मेडिकल स्टोर आदि सुविधाएं प्रदान की जा रही है एवं जीवन आशा हॉस्पिटल एवं पुनर्वास केंद्र के पंचम स्थापना दिवस (20 मई 2024) को पूज्य आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज की प्रेरणा से **"सौरभ सागर सेवा संस्थान"** ने भविष्य मे कैंसर के उपचार हेतु **कैंसर हॉस्पिटल** के प्रारंभ की घोषणा की।

यह दवा एवं दुआ का श्रेष्ठतम स्थल है यहां दवा के लिए जीवन आशा हॉस्पिटल एवं दुआ के लिए श्री 1008 मंशापूर्ण भगवान महावीर स्वामी का आश्रय है।

यह जिनालय दिल्ली एन. सी. आर क्षेत्र गाजियाबाद जिले के मुरादनगर में गंगनहर मार्ग पर स्थित है। संसार के दु:खो से दु:खी होकर जब मनुष्य तन–मन–धन से लाचार होकर इस जिनालय में प्रवेश करता है तो मंशापूर्ण महावीर उसे अपनी शरण में ले लेते है और उसके सभी दु:खों को हर लेते है। यह अतिशयकारी प्रतिमा सबकी मनोकामना पूर्ण करती है इसलिये **आचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज ने इसे "मंशापूर्ण महावीर" नाम दिया है।**

वृहत् शान्तिधारा पाठ

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्वतीर्थंकराय श्रीमद्-रत्नत्रयरूपाय दिव्यतेजोमूर्त्तये प्रभामण्डलमण्डिताय द्वादशगणसहिताय, अनन्तचतुष्टयसहिताय, समवसरण-केवलज्ञान-लक्ष्मीशोभिताय, अष्टादश-दोषरहिताय, षट्-चत्वारिंशद्-गुणसंयुक्ताय, परमेष्ठि-पवित्राय, सम्यग्ज्ञानाय स्वयम्भुवे सिद्धाय बुद्धाय परमात्मने परमसुखाय त्रैलोक्यमहिताय, अनंत-संसार- चक्रप्रमर्दनाय अनन्तज्ञान-दर्शन-वीर्य-सुखास्पदाय त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय सत्यब्रह्मणे उपसर्गविनाशनाय घातिकर्मक्षयंकराय अजराय अभवाय अस्माकं (अमुक राशिनामधेयानां) व्याधिं घ्नन्तु। श्री जिनाभिषेकपूजन प्रसादात् अस्माकं सेवकानां सर्वदोष, रोग, शोक, भय, पीड़ा, विनाशनं भवतु।

ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष, दोष, कल्मषाय, दिव्य-तेजोमूर्तये श्रीशान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्वविघ्न, प्रणाशनाय सर्वरोगापमृत्यु-विनाशनाय सर्वपरकृत-क्षुद्रोपद्रव-विनाशनाय सर्वारिष्ट, शान्ति, कराय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम सर्वविघ्न-शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं कुरु-कुरु स्वाहा।

मम कामं शान्तिं-शान्तिं। रतिकामं शान्तिं-शान्तिं। बलिकामं शान्तिं-शान्तिं। क्रोधं-पापं-वैरं च शान्तिं-शान्तिं। अग्निवायुभ्यं शान्तिं-शान्तिं। सर्वशत्रु-विघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वोपसर्गं शान्तिं-शान्तिं। सर्वविघ्नं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराज्य दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वचौर दुष्टभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्व-सर्प-वृश्चिक-सिंहादिभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वग्रहभयं शान्तिं-शान्तिं। सर्वदोषं व्याधिं डामरं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वपरमंत्रं शान्तिं-शान्तिं। सर्वात्मघातं परघातं च शान्तिं-शान्तिं। सर्वशूल कुक्षि अक्षि शिरो ज्वररोगं शान्तिं-शान्तिं। सर्वनरमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वगजाश्व गौ-महिष-अजमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वसस्य-धान्य-वृक्ष-लता-गुल्म-पत्र-पुष्प-फलमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वराष्ट्रमारिं शान्तिं-शान्तिं। सर्वक्रूर-वेताल डाकिनी-भयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वापस्मारिं शान्तिं-शान्तिं। अस्माकं सर्व अशुभकर्म-जनित-दुःखानि शान्तिं-शान्तिं। दुष्टजनकृतान्-मंत्र-तंत्र-दृष्टि-मुष्टि-छल-छिद्रदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वदुष्ट-देव-दानव-वीर-नर-नाहर-सिंह-योगिनी-कृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व-अष्टकुली-नागजनित-विषभयानि शान्तिं-शान्तिं। सर्वस्थावर जंगम वृश्चिक सर्पादिकृत-दोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्वसिंहाष्टा-पदादि कृतदोषान शान्तिं-शान्तिं।

परशत्रुकृत-मारणोच्चाटन-विद्वेषण-मोहन-वशीकरणादि कृतदोषान् शान्तिं-शान्तिं। सर्व कर्माष्टकं शान्तिं-शान्तिं। ॐ ह्रीं अस्मभ्यं चक्र-विक्रम-सत्त्व-तेजो-बल-शौर्य-वीर्य-शान्ती: पूरय पूरय। सर्वजीवानंदनं कुरु कुरु जनानंदनं कुरु कुरु भव्यानंदनं कुरु कुरु सर्व गोकुलानंदनं कुरु कुरु। सर्वराजानंदनं कुरु कुरु। सर्वग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पतन-द्रोणमुख-संवाहनानंदनं कुरु कुरु। सर्वानंदनं कुरु कुरु स्वाहा।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-र्व्यसन-वर्जितम्।
अभयं क्षेममारोग्यं, स्वस्तिरस्तु विधीयते।।

श्रीशान्तिरस्तु। शिवमस्तु। जयोस्तु। नित्यमारोग्यमस्तु। सर्व जीव कल्याण मस्तु। शुभ अस्तु। सुकीर्ति रस्तु। सर्व रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु। सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्र वृद्धि रस्तु। अस्माकं तुष्टि। पुष्टि। समृद्धिरस्तु। सुखमस्तु। दीर्घायुरस्तु। कुलगोत्र धनानि सदा सन्तु। सद्धर्म श्रीबलायुरारोग्यै- श्वर्याभिवृद्धिरस्तु।

वृषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुहुप शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज पूजित सुरराय॥
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।
मुनिसुब्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वर्द्धमान पद शीश झुकायें॥

ॐ ह्रीं श्रीं *वृषभादि वीरान्तरेभ्य: शान्तये शान्तिधारा स्वाहा।*

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतविद्यायै णमो अरहंताणं इति ह्रौं सर्व शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीर जिनेद्राय नम: रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।

ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

सम्पूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ:, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्र:।।

अर्घ

उदक चंदन तंदुल पुष्पकैश्चरु सुदीप सुधूप फलार्घ्यकै:।
धवल मंगल गान रवाकुले जिनगृहे अभिषेकमहं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वर्धमानपर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महाशांतिधाराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

इह विधि ठाडो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥1॥
अनंत चतुष्टय के धनी, तुमही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज॥2॥
तिहुँ जग की पीड़ा-हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार॥3॥
हरता अघ अंधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरता पद दातार हो, धरता निजगुण रास॥4॥
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप॥5॥
मैं वंदौ जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबंध के छेदने, और न कछू उपाय॥6॥
भविजन को भवकूप तैं, तुम ही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥7॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल॥8॥
तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरै, विष निरविषता थाय॥9॥
चक्री खगधर इंद्रपद, मिलै आपतैं आप।
अनुक्रम ते शिवपद लहैं, नेम सकल हनि आप॥10॥
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥11॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥12॥
थकी नाव भवदधिविषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥13॥
रागसहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेट्यो अबै, मेटो राग कुटेव॥14॥

कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥15॥
तुमको पूजैं सुरपती, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥16॥
अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार॥17॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारिकैं, कीजे आप समान॥18॥
तुमरी नेक सुदृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हो, नेक निहार निकार॥19॥
जो मैं कहहूँ औरसों, तो न मिटै उर भार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार॥20॥
वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश॥21॥
चौबीसों जिनपद नमों, नमों शारदा माय।
शिवमगसाधक साधु नमि, रच्यो पाठसुखदाय॥22॥
मंगल मूर्ति परमपद, पंचधरो नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान्॥23।
मंगल जिनवर पद नमों, मंगल अर्हंतदेव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दौं स्वयमेव॥24।
मंगल आचारज मुनि मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दौं मन वच काय॥25॥
मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म॥26॥
या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल 'नाथूराम' यह भवसागर दृढ़ पोत॥27॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत् (नौ बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

मंगल कलश स्थापना

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं पुष्पदंताद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलम्।।
ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

1. **सर्वप्रथम शुद्ध जल से स्वयं को एवं हाथों को शुद्ध करें–**
   ॐ ह्रीं असुजर सुजर भव स्वाहा।
2. **तत्पश्चात् जल से भूमि शुद्धि करें–**
   ॐ ह्रीं भूः शुद्धयतु स्वाहा।
3. **सकलीकरण करें–**
   ॐ ह्राँ णमों अरिहंताणं मम शीर्ष रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रीं णमों सिद्धाणं मम मस्तक रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रूं णमों आयरियाणं मम हृदय रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रौं णमों उवज्झायाणं मम नाभि रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ ह्रः णमों लोए सव्वसाहूणं मम पादौ रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
   ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
4. **अक्षत् चावल लेकर जमीन पर (जहाँ पर कलश स्थापित करना हो वहाँ) स्वास्तिक बनावें।**
   ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमो नमः स्वास्ति-2 जीव-2 नन्द-2 वर्द्धस्य-2 विजयस्व-2 अनुशाधि-2, पुनीहि-2 पुण्याहं-2 मांगल्यं मांगल्यं पुष्पाञ्जलि। **(पुष्प क्षेपण करें)**
5. ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमो अर्हते श्रीमते पवित्रतर जलेन मंगल कलशं स्थापितं करोमि स्वाहा। **(यह मंत्र पढ़कर कलश स्थापित करें।)**
   अपनी जाति, गौत्र, दादा, पिताजी, माताजी, स्वयं, पत्नी, बच्चों का नाम तथा सम्वत्, माह, पक्ष, तिथि, वार, बोलकर कलश स्थापित करें कलश में 5 हल्दी, 5 सुपाड़ी, पीली सरसों, सबा रुपया, धनिया आदि मांगलिक वस्तुएं डाले।
6. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित क्षेत्रपाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(नैवेद्य पुष्प आदि अर्घ चढ़ायें)**
7. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अत्र स्थाने विराजित सर्व वास्तु देवा आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः ठः स्थापना इदं अर्घं समर्पयामि। **(अर्घं समर्पण करें)**

8. ॐ ह्रीं आँ क्रौं वायु कुमार देवाय अत्र स्थाने वायु शुद्धि कुरू-कुरू हूँ फट् स्वाहा। **(हाथों से हवा करें अर्घ समर्पयामि)**

9. ॐ ह्रीं आँ क्रौं मेघ कुमार देवाय अत्र स्थाने भूमिं शुद्धि कुरू-कुरू अँ हँ सँ वँ क्षँ ठँ क्षः फट् स्वाहा **(अर्घं समर्पयामि)**

10. ॐ ह्रीं आँ क्रौं अग्नि कुमार देवाय भूमि ज्वलय-2 फट् स्वाहा। **(कपूर जलावें) (अर्घं समर्पयामि)**

11. ॐ ह्रीं आँ क्रौं षष्टिसहस्त्र संख्येभ्यो नागकुमार देवाय जलाञजलि स्वाहा। **(जलं अर्घं समर्पयामि)**

12. ॐ ह्रीं आँ क्रौं इन्द्र, आग्ने, यम, नैऋत्य, वरूण, पवन, कुबेर, ईशान, सोम, घरणेन्द्र दिग्पाल देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

13. ॐ ह्रीं आँ क्रौं पंचदश तिथि देवता आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

14. ॐ ह्रीं आँ क्रौं आदित्य चन्द्र-मंगल बुध-गुरू शुक्र-शनि राहु-केतु नवग्रह देवाय आगच्छ-2 तिष्ठ-2 ठः ठः स्वाहा। **(अर्घं समर्पयामि)**

15. ॐ ह्रीं नमोऽर्हदभ्यो पंच परमेष्ठिभ्यो: नमः। **(अर्घं)**

16. ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्त चतुर्वीस तीर्थंकरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**

17. ॐ ह्रीं वृषभसेनादि गौतमान्त गणधरेभ्यो: नमः। **(अर्घं)**

18. ॐ ह्रीं मम कुल गुरूवे नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**

19. ॐ ह्रीं आँ क्रौं गौमुखादि चतुर्विंशति यक्षादि देवाय अर्घं समर्पयामि।

20. ॐ ह्रीं आँ क्रौं चक्रेश्वरी ज्वालामालिनी पद्मावति आदि चतुर्विंशति यक्षी देवाय नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**

21. ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं धृति कीर्ति बुद्धि शान्ति पुष्टि लक्ष्मी देवीभ्यो नमः। **(अर्घं समर्पयामि)**

22. मम कुल गृह देवो जिनेश्वरो तीर्थंकरो गधधर गुरूओं, मम गुरू भक्ति प्रसादात् प्रसन्नो भवतु मम कुल (जाति) गोत्र का नाम स्मरण करें। मम् धन धान्य पुत्र पौत्रादिक सौख्यं शांतिं पुष्टिं आरोग्यं अक्षीणं भवत् स्वाहा।

23. **बीजाक्षर मंत्रों से सज्जित, मंगल कलश महान है।**
शुभ संकल्पों का दाता यह, कल्प वृक्ष समान है।।
हो विधान पूजा शुभ कारज, कलश क्लेश सब दूर करें।
अर्घावली मंत्रों को अर्पित, सुख शांति भरपूर करें।।
ॐ ह्रीं श्री क्लीं ऐं बीजाक्षर युक्त कलश यन्त्राय नमः अर्घम् निर्वापामीति स्वाहा।

24. कलश के सामने दीप धूप कर इष्ट देव की स्तुति करें। अर्घ चढ़ाकर पुनः क्षमा याचना कर विसर्जन करें।

अर्घ-मंशापूर्ण महावीर स्वामी

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया
अक्षत कुसुम चरूवर पावन दीप धूप वन्दन भाया
सिद्ध शिला फल चाह लिये मैं अष्ट द्रव्य चढ़ाऊँगा
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया॥
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष॥

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं॥
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं॥

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय! जय!! जय!!! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!! नमोऽस्तु!!!
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।

अपराजित मंत्राऽयं, सर्व विघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।

एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होई मंगलं।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म, वाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।

कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी भूत पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षेपण करें)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाण-पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हंत सिद्धाचार्योपाध्याय, सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीभगवज्जिन-अष्टाधिक-सहस्रनामेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घ्यकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले-जिनगृहे-जिननाममहं यजे॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भवसरस्वतीदेव्यै अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं,
स्याद्वाद-नायकमनन्त-चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघसुदृशां सुकृतैकहेतुर्,
जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष-मयाऽभ्यधायि॥1॥
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय,
स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।

स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय,
स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधा-प्लवाय।
स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक विततैक चिदुद्गमाय,
स्वस्ति त्रिकाल सकलायत विस्तृताय।।3।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरुपं,
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगंतुकामः।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्,
भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।4।।
अर्हन्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि,
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमल-केवल-बोधवह्नौ,
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति विधान

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।

।।इति श्रीचतुर्विंशति-तीर्थंकर-स्वस्ति-मंगलविधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।।

परमर्षि स्वस्ति मंगल विधान

नित्याप्रकम्पाद्‌भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनःपर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान बलाद्वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥

प्रज्ञा प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग-निमित्त-विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥

जंघा-नल-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु, प्रसून-बीजांकुर-चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण स्वैरविहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपूर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥

सकामरूपित्व-वशित्वमैश्यं, प्राकाम्यमन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुणप्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणंचरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥

आमर्ष-सर्वौषधयस्तथाशी र्विषाविषा दृष्टि-विषा विषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुःपरमर्षयो नः॥9॥

क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतो मधु-स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीणसंवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्शयो नः॥10॥

॥इति परमर्षि-स्वस्ति-मंगल-विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि॥

''देव-शास्त्र-गुरु-जिनतीर्थ-अकृत्रिम तीर्थ तीस चौबीसी विद्यमान 20 तीर्थंकर-निर्वाण भूमि'' की समुच्चय पूजन *

(जैनाचार्य श्री सौरभ सागर जी महाराज द्वारा रचित)

परम् देव अरिहंत सिद्ध गुरु, आचारज साधु उवज्झाय।
माँ जिनवाणी बीस जिनेश्वर, विद्यमान तीर्थंकर ध्याय।।
तीर्थंकर मुनि मोक्ष भूमि अरुँ, अकृत्रिम जिन वंदन है।
तीस चौबीसी तीर्थंकर का, आह्वाहन स्थापन है।।

ॐ ह्रीं अरिहंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय साधु पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिन बिम्ब समूह-तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह-अत्र अवतर अवतर-अत्र तिष्ठ-तिष्ठ अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

जल

जल जीवन रक्षित करता है, शांत स्वभावी सरल तरल।
चरणों में जल अर्पित करता, पाने को शुभ मोक्ष महल।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह-द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह-अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय **जलं** निर्वपामीति स्वाहा।

---

*कभी-कभी समय की अल्पता के कारण आराधना के तीव्र भाव उत्पन्न होते हैं उन सभी आराधना चाहने वालों के लिए आचार्यश्री ने महाउपकार करके एक साथ "पंच परमेष्ठी, माँ जिनवाणी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, अढाई द्वीप, सम्पूर्ण निर्माण भूमि, अकृत्रिम जिनबिम्ब (प्रतिमा) एवं तीस चौबीसी" की समुच्चय पूजा की रचना की है।

चंदन

ताप विनाशक तन का चंदन, पूज्य चरण में लें आया।
क्रोध द्वेष प्रतिशोध त्यागकर, शीतल सुरभित गुण गाया।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह संसार ताप विनाशनाय **चंदनं** निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

सिद्ध शिला का वासी आतम, पापी बन भव घूम रहा।
त्रय योगों को स्थिर करके, द्रव्य चढ़ा मन झूम रहा।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अक्षय पद प्राप्ताय **अक्षतं** निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम भोग का रोग भयंकर, मन बगियाँ में खिलता हैं।
वैरागी प्रभु के सम्मुख आ, काम भाव सब मिटता हैं।।
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह कामबाण विनाशनाय **पुष्पं** निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

पतितोद्धारक आप निराकुल, क्षुधारोग से पीड़ित हूँ।
धर्म ध्यान की औषध पाकर, भक्ति भाव से जीवित हूँ।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह क्षुधा रोग विनाशनाय **नैवेद्यं** निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्या भाव का महा तिमिर प्रभु, काल अनादि से भीतर।
तव दर्शन की शुभ्र दीप से, ज्योतिर्मय आतम अंदर।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोहांधकार विनाशनाय **दीपं** निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

तव चरणों की धूपायन में, कर्म धूप खेनें आया।
धर्म गंध चारों दिश फैले, मन पूजा कर हर्षाया।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अष्ट कर्म विनाशनाय **धूपं** निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भक्ति भाव की दिव्य तरु में, चढ़कर रत्नत्रय पाऊँ।
जिन गुण फल आतम में प्रगटे, सिद्धालय में रम जाऊँ।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह मोक्षफल प्राप्ताय **फलं** निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता।।
परमेष्ठी अरु माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

पंचपरम गुरु परमेष्ठी हैं, पूज्य पुरुष अरिहंत मुनि।
सिद्ध निरामय निराकार हैं, अष्ट कर्म के कष्ट हनि।।1।।

आचारज उवज्झाय साधुगण, ज्ञानध्यान तप लीनयति।
णमोकार नित जपकर करता, चरण वंदना जैनमति।।2।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व प्रभो
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांश पद, वासु विमलानन्त नमो।।3।।

धर्म शान्ति कुन्थु अरनाथा, मल्लि मुनिसुव्रत नमि जपूं।
नेमी पारस महावीर जी, वर्तमान चौबीसी भंजू।।4।।

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी, अष्टापद पावा गिरनार।
चम्पापुर सह ढाई द्वीप की, मोक्ष भूमि बन्दूँ शतवार॥5॥

सीमंधर से अजितवीर्य तक, विद्यमान श्री बीस जिनेश।
क्षेत्र विदेह में देह रहित हो, हरते सारे कर्म क्लेश॥6॥

आठ कोटि अरुँ छप्पन लक्षा, सत्तावन हज्जार कहें।
चार शतक इक्यासी प्रतिमा, नमन उन्हें शतवार करें॥7॥

जिनप्रतिमा अकृत्रिम जग में, दिव्य रूप है वृहद विशाल।
ऊर्ध्व अधो अरुँ मध्य लोक के, जिन प्रतिमा बन्दूँ त्रयकाल॥8॥

ऐरावत और भरत क्षेत्र के, तीर्थंकर गुणगान करूँ।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीस चौबीसी ध्यान धरूँ॥9॥

प्रभु पूजन दर्शन वंदन से, निद्धत निकाचित कर्म कटें।
अनुपम आत्मिक अव्यय सुख का, सूरज निज आतम प्रगटे॥10॥

दिव्य ध्वनि की निर्मल वाणी, माँ जिनवाणी कहलाती।
दिव्य ज्ञान दे अन्तर्मन की, कल्मषता सब धो जाती॥11॥

परमेष्ठी जिनवाणी माता, क्षेत्र विदेह के बीस जिनेश।
सिद्ध भूमि अकृत्रिम प्रतिमा, तीस चौबीसी के तीर्थेश॥12॥

देव शास्त्र गुरु तीरथ भूमि, तीर्थंकर को सदा नमूँ।
अर्घावली चरणों में देकर, शुद्धातम को सदा भजूँ॥13॥

दोहा- **कर्म रहित जिनदेव की, भक्ति करे कल्याण।**
"सौरभसागर" नित नमें, पाने शाश्वत धाम॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर समूह जयमालाय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **परमेष्ठी श्रुत बीस जिन, तीस चौबीसी ध्याय।**
अकृत्रिम जिनराज भज, सिद्ध भूमि सिर नाय॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री मंशापूर्ण महावीर विधान
माण्डला

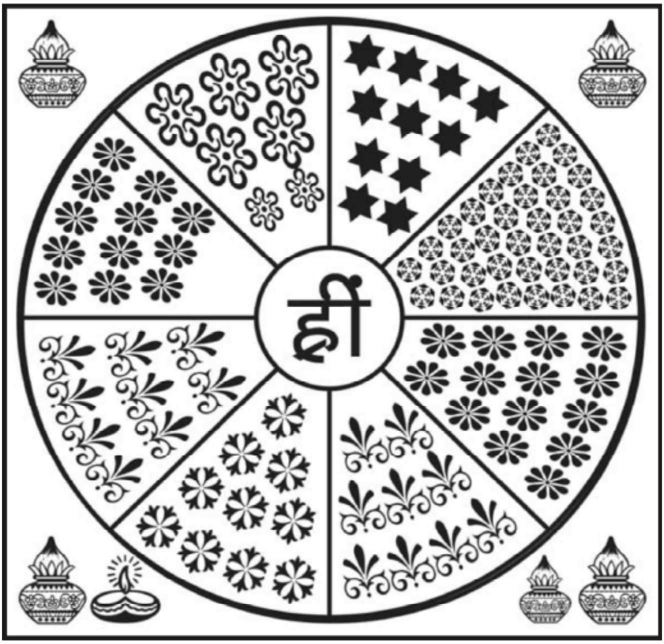

कुल अर्घ्य 111 : प्रथम वलय (भावाराधना) 10, द्वितीय वलय (गर्भाराधना) 9, तृतीय वलय (जन्माराधना) 12, चतुर्थ वलय (नामाराधना) 7, पंचम वलय (दीक्षाराधना) 11, षष्टम वलय (ज्ञानाराधना) 39, सप्तम वलय (दंशनाराधना) 14, अष्टम वलय (मोक्षाराधना) 9

मंशापूर्ण महावीर व्रत विधि

व्रतारम्भ : शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी से या महावीर स्वामी की किसी भी कल्याणक तिथि से

अवधि : 3 वर्ष से 6 वर्ष

व्रतपूजा : व्रत वाले दिन मंशापूर्ण महावीर विधान, पूजा चालिसा पढ़ें।

जाप : ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीराय सुख सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

व्रत विधि : 72 उपवास या एकासन

श्री मंशापूर्ण महावीर विधान प्रारम्भ

स्थापना

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जल का जलवा प्रभु जगति में, शुचिकर प्यास बुझाता है।
तेरी पूजा में जल अर्पित, जन्म जरा विनशाता है॥
नीर सहित हे महामुनि, मैं भक्ति सरिता लाया हूँ।
मंशापूरण महावीर की, पूजा कर हर्षाया हूँ॥

ॐ ह्री श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन की प्रभु शीतलता तो, तन का ताप मिटाती है।
प्रभु पूजा भक्ति का चन्दन, वन्दन बन मुस्काती है॥
भव भव की ज्वाला शान्त करूँ, प्रभु चन्दन चरण चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं गीत आपके गाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

अक्षय सुख का अनुपम वैभव, भोगों में फँस खोया हूँ।
जीवन धन्य न कर पाया प्रभु, मोह नींद में सोया हूँ॥
चरणों में अक्षत अर्पित कर, अक्षय निधी को पाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं कर्म कलंक मिटाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

यह कोमल कुसुम मनोहर है, जो क्षण भंगुरता दर्शाता।
यौवन जीवन पा भोगों में, क्यूँ मन मेरा रच पच जाता॥
हे बाल ब्रह्मचारी जिनवर, यह भाव पुष्प स्वीकार करो।
श्री मंशापूरण महावीर जी, काम नाश उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

क्षुधा वेदिनी महाभयानक, भक्ष्य अभक्ष्य सदा चाहे।
रात दिवस का भेद गिने ना, धर्म कर्म सब विनशावे॥
हे महायति तेरी चर्या कर, क्षुधा रोग विनशाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, गौरव गाथा गाऊँगा॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

जगमग जगमग जलता दीपक, बाहर उजियाला करता।
अन्तर मन आलोकित होवे, भक्ति दीप माला धरता॥
दिव्य ज्ञान की किरणें फूटें, भाव यही मैं भाता हूँ।
श्री मंशापूरण महावीर, मैं चरणन दीप चढ़ाता हूँ॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

काम क्रोध मद लोभ मोह की, भीतर ज्वाला जलती है।
नित नूतन परिवेश बनाकर, निज आतम को छलती है।।
दश विध धूप अगन में खेकर, दश धर्मों को पाऊँगा।
श्री मंशापूरण पूजा करके, आठों कर्म जलाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अष्ट–कर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

भाव समर्पण का फल लेकर, भक्ति में अनुरक्त हुआ।
सिद्धालय का अमृत फल पा, कर्म जाल से मुक्त हुआ।।
हे सन्मति दाता बुद्धि दो, ना लौकिक फल की चाह करूँ।
श्री मंशापूरण महावीर जी, धर्म लीन शिव राह वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय मोक्ष महाफल प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रथम वलय–भावाराधना

(प्रथम–वलय–मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो।।
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया।।1।।

ॐ ह्रीं महामना महति श्रीमहावीरमंशापूर्णमहावीराय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धन्य धन्य चेतन्य स्वभावी, रत्नत्रय से पूर्ण प्रभो।
आत्मसाधना से निज साधे, कर्म करे सब चूर्ण विभो।।
मोक्ष मार्ग पर निराबाध ही, श्रद्धालु जन चलते हैं।
महावीर के पथ को पाकर, निजानन्द रस चखते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं रत्नत्रय-धर्मप्रतिपादकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दुख से पीड़ित है जग प्राणी, पर सुख भी ना भाता है।
मन ईर्ष्या से भरा हुआ है, पर में ही भरमाता है।।
भक्ति ध्यान के उपवन से कुछ, द्रव्य भाव ले आया हूँ।
मंशापूरण महावीर की, पूजा कर हर्षाया हूँ।।3।।

ॐ ह्रीं ईर्ष्या-रहित-भाव विकासक निर्मल-भाव प्रकाशक-श्रीमंशापूर्ण महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव को भूला प्राणी, भव भव गोते खाता है।
मारिची सम जग में भटका, पुण्य पाप फल पाता है।।
दुर्लभ नरभव का मूल्यांकन, भव्य जीव ही करते हैं।
महावीर सा संयम पाकर, भव सागर से तरते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं भव-भ्रमण-विमुक्ताय नरभव-संयमप्राप्तये श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तत्व ज्ञान श्रद्धान अटल कर, संयम पथ अपनाना है।
जीव तत्व को जाने चेतन, यही भाव सुख धामा हैं।।
महावीर ने सर्व जीव को, करुणा मयी उपदेश दिया।
निज में निज गुण पाले चेतन, यही सत्य संदेश दिया।।5।।

ॐ ह्रीं तत्वज्ञानश्रद्धानाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य तेज से सूर्य प्रभा को, क्षीण करे महावीर प्रभो।
सोम्य छवि से चन्द्र छवि को, क्षीण करे महावीर प्रभो।।
समवशरण की गुणमय गरिमा, भावदशा समझाती हैं।
आत्म रमण को संयम धरले, जो कल्याण कराती है।।6।।

ॐ ह्रीं समवशरणविराजित-तीर्थंकराय भाव-दशा पवित्रकरणार्थे श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कल कल कल कल सरिता बहती, अपनी मंजिल पाने को।
भक्त सदा तव चरण सेवता, मोक्ष मार्ग अपनाने को॥
आयु की सीमा निश्चित है, महावीर का ध्यान करूँ।
उनके पद चिन्हों पर चलकर, शुद्धातम का ध्यान धँरु॥7॥

ॐ ह्रीं संन्यासधारणसमर्थाय शुद्धात्मदर्शनाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्त समुन्दर सूरज सरिता, किसी एक के ना होते।
जो लेता है लाभ इसी से, उसको ही ये फल देते॥
मंशापूरण महावीर जी, ना देते ना लेते है।
जो भक्ति श्रद्धा से करता, पुण्य बन्ध फल देते है॥8॥

ॐ ह्रीं भेदरहितजीवनपरिणमाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन चंचल शुभ अशुभ विचारें, पुण्य पाप बन्धन करता।
निज आतम में स्थिर ना हो, फल भोगे क्रन्दन करता॥
दुख अर्णव से पार उतारो, मंशापूरण जिन भगवान।
क्रोध मान मद लोभ मिटाऊँ, अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रणाम॥9॥

ॐ ह्रीं अशुभपापभावविसर्जनाय शुभ-पुण्य-भावसृजनाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥10॥

ॐ ह्रीं शुद्ध भाव परिणताय श्री मंशापूर्ण महावीर तीर्थंकराय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय-गर्भाराधना

(द्वितीय-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जन्म मरण दुख सहता चेतन, चतुर्गति में भ्रमण किया।
त्रस पर्याय न पाई उसने, गोद निगोद में रमण किया।।
स्वाभाविक पुण्योदय पाकर, एकन्द्रिय पर्याय तजा।
तीर्थंकर का दर्शन पाकर, निर्मलता से उन्हें भजा।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्गतिभ्रमणविमुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर की जीवन गाथा, पूर्व जन्म की याद करूँ।
भक्ति ध्यान से बदले जीवन, ऐसा मैं फरियाद करूँ।।
जग वैभव को पाकर मैंने, निज वैभव ठुकराया है।
पुनर्जन्म सब मेटो स्वामी, अन्तर्मन अकुलाया है।।2।।

ॐ ह्रीं पुनर्जन्मविनाशनसमर्थकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आदिनाथ के समशवरण में, जाकर भी वह ना सुधरा।
अहंकार के वशीभूत हो, जैन धरम को वह विसरा।।
पंचानन पर्याय में आकर, मुनिराज से ज्ञान मिला।
श्रद्धा धर चारित्र धारकर, मोक्ष मार्ग का द्वार खुला।।3।।

ॐ ह्रीं भव-भवान्तरे वीतराग-धर्म-प्राप्तये श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सन्त समागम जिनवर वाणी, दुर्लभता से मिलती है।
जिन मुनि दर्शन पूजन से ही, कर्म शृंखला कटती है।।
श्वासों का ना यहाँ भरोसा, एक आती इक जाती है।
तीर्थंकर पद पा जाऊँ जो, आवागमन मिटाती है।।4।।

ॐ ह्रीं जिन-मुनिसमागमाय सद्धर्म-प्राप्तये श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह देव कनकोज्जवल राजा, सप्त स्वर्ग में जन्म हुआ।
नन्द राज नर भव को पाकर, तीर्थंकर पद बन्ध किया।।

स्वर्ग सोलहवें में जाकर के, अपना समय बीताए हैं।
त्रिशला रानी के उर आकर, तीर्थंकर कहलाए हैं॥5॥

ॐ ह्रीं भव-भवान्तरे-संयम-सम्यक्त्वप्राप्तये श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु चरणों में दर्शन शुद्धि, विनय ज्ञान तप शील धरा।
त्याग तपस्या वैरागी बन, देवागम गुरु सेवा करा॥
धर्म प्रभावना वात्सल्य धर, षट् क्रिया प्रवचन भक्ति।
साधु समाधि धारे-सोला, बंधति तीर्थंकर प्रकृति॥6॥

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धयादि प्रवचन वात्सल्य पर्यन्त षोडश-भावनाबलेन तीर्थंकरपद प्राप्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिशला रानी कुण्डलपुर के, महलों में सपने देखे।
सिद्धारथ ने फल बतलाया, तीर्थंकर बालक जन्मे॥
अष्ट देवियाँ छप्पन कन्या, माता की सेवा करतीं।
पन्द्रह महिने रत्न बरसते, धन्य धन्य जनता कहती॥7॥

ॐ ह्रीं षोडश-स्वप्न-प्रदर्शकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन ज्ञान के धारी होकर, गर्भ वास नव मास रहे।
मंजुषा जो देव रचित थी, उस पर ही प्रवास करें॥
परिवर्तन ग्रह राज्य नगर का, पुण्य जीव का दर्शाता।
सप्त खण्ड का महल अनुपम, कुण्डलपुर में बन जाता॥8॥

ॐ ह्रीं गर्भवासे देवोपुनीत-वैभवप्रदर्शकाय आषाढ शुक्ला षष्ठ्यां गर्भमंगल-मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥9॥

ॐ ह्रीं मंजूषा विराजित श्री मंशापूर्ण-महावीर-तीर्थंकराय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय–जन्माराधना

(तृतीय-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चैत सुदी तेरस का शुभ दिन, तीर्थंकर अवतार हुआ।
तीन लोक में शान्ति छाई, घर घर मंगलाचार हुआ॥
देव इन्द्र हर्षित हो करके, कुण्डलपुर तत्क्षण आया।
ऐरावत पर बिठा प्रभु को, मेरु पर था न्यवहन कराया॥1॥

ॐ ह्री चैत्र शुक्ला त्रयोदश्यां जन्म-मंगल-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुन्दर रूप सलोना मनहर, जन मन आकर्षित करता।
किलकारी करते आँगन पर, नर देवा हर्षित होता॥
भक्ति सेवा पूर्व जन्म में, निर्मल भावों से करते।
अतिशय रूप सदा ही पाते, मन्द मन्द प्रमुदित होते॥2॥

ॐ ह्रीं शतेन्द्र-नेत्र-मनोहरी-दिव्यातिशयरूपमण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म पुष्प की पुलकित होकर, गन्ध प्रभावना फैलाते।
जन मन को जागृत करते वे, त्याग मार्ग को दर्शाते॥
ऐसे जन तीर्थंकर बनकर, तन सुरभित सौरभ पाते।
जिन जिन गलियों से गुजरे वे, उपवन से है महकाते॥3॥

ॐ ह्रीं सदाचरण-गन्ध-विस्तारकाय दिव्यसुगन्धिततन-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रम करते पर खेद न करते, धर्म त्याग तप मारग पर।
पद विहार या आतापन हो, अनशन आदि धारण कर॥
ऐसे तपसी जीव कदाचित्, तीर्थंकर पद को पाते।
नहीं पसीना निर्मल तन से, सबके चित को उमगाते॥4॥

ॐ ह्रीं नि:रोग-तन-प्रदायकाय नि:श्वेदत्व-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

औदारिक तन की पुष्टि को, नर देवा कृत ले आहार।
ध्यान साधना लीन रहे पर, कभी नहीं करते निहार॥
सारे भोजन के अंशों को, दिव्य दिप्ती से नष्ट करें।
चार घातियाँ कर्म नाशकर, निज परमातम इष्ट वरें॥5॥

ॐ ह्रीं विशुद्ध-तन-प्रदायकाय-निहार-रहित-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन लोक की सुख सुविधा पा, जनधन के वे संग रहे।
हितमित प्रिय वाणी को बोलें, नहीं किसी को तंग करें॥
मुनि बने पर मौन रहे वे, आत्म साधना ही उद्देश्य।
केवलज्ञानी बनकर जग में, जीवों को दें धर्म उपदेश॥6॥

ॐ ह्रीं मधुर-वचन-प्रस्फुटिताय हित-मित-प्रिय-वचनातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्व जन्म में मुनिराज की, निशदिन वैय्या वृति करें।
संहनन वज्रवृषभ को पाकर, अतुल्य बल की शक्ति धरें॥
शक्ति पाकर कर्म नशावें, ना जीवों का घात करें।
तीर्थंकर की शक्ति संपदा, सब जीवों पे राज करें॥7॥

ॐ ह्रीं चरमोत्तम-शरीर-प्राप्ताय बज्रवृषभ-नाराच-संहनन-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पशु पक्षी या नर देवा हो, सब पर करुणा बरसाते।
भाव सदा वात्सल्य मयी रख, सब जीवों को दुलराते॥
प्रेम पूर्ण व्यवहार के कारण, रक्त श्वेत हो जाता है।
प्राणी मात्र को अभय दान दे, तीर्थंकर पद पाता है॥8॥

ॐ ह्रीं सर्व-जीववात्सल्य-प्रदायकाय क्षीरवत्-श्वेतरुधिर-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्त पाद मस्तक चिह्नांकित, शुभ लक्षण शोभित करता।
गुणरत्नों से भूषित बालक, जनमन को हर्षित करता॥

आठ सहित कुल एक हजारी, लक्षण से परिपूरित हैं।
अर्घ चढ़ाऊँ करूँ आरती, श्रद्धा से नित पूजित हैं॥9॥

ॐ ह्रीं शुभ-लक्षण-विकासकाय अष्टोत्तरसहस्रलक्षणाधिश्वराय श्रीमंशापूर्ण महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गोल कपोल या दीर्घ भुजाएँ, उन्नत कंधे मन भाएँ।
उदर कमर या चरण लखे सब, सुन्दर नक्कासी पाएँ।
अंग अंग का नाप तोल से, सुन्दर तन निर्मित होता।
समचतुरस्र संस्थान से, तन विकृत वर्जित होता॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वजनाकर्षकसौन्दर्यप्रदायक-समचतुरस्र-संस्थान-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशविध मुनियों की भक्ति या, पीड़ित की सेवा करते।
मन से करुणा स्रोत बहाकर, वचनों से प्रमुदित करते॥
स्वार्थ रहित हो तीन योग से, हर पीड़ा जो हरते हैं।
मन वच तन से महाबली हो, आत्म बली बन रहते हैं॥11॥

ॐ ह्रीं त्रयोबल-वर्धनाय अतुल-बल-वीर्यपराक्रमगुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण श्रृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥12॥

ॐ ह्रीं जन्मावसरे त्रिभुवन-शक्ति-प्रदायकाय चैत-सुदी-तेरस-जन्ममंगलमंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्थ वलय-नामाराधना

(चतुर्थ-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

माता त्रिशला का प्यारा वह, सिद्धारथ का नन्दन है।
सोधर्म इन्द्र का आसन कम्पा, करता तत्क्षण वन्दन है॥

मेरु पर्वत पर ले जाकर, प्रथम वहाँ अभिषेक किया।
शक्ति जानी तीर्थंकर की, 'वीर' नाम प्रथमेश दिया॥1॥

ॐ ह्रीं अभिषेक-पूर्व-सुमेरुपर्वतोपरि शक्तिज्ञाताय सौधर्मइन्द्रेण-वीर-नाम-प्रदत्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलह सपने माता देखे, घर में सब भण्डार भरे।
राज्य शक्ति की वृद्धि होवे, रत्नों की बरसात करे॥
कुण्डलपुर के राज्य नगर में, सब सुख बढ़ता जाता है।
इसलिए शुभ नाम प्रभु का, 'वर्धमान' कहलाता है॥2॥

ॐ ह्रीं राज्य-नगर-गृह-वैभववर्धनाय पितृ-प्रदत्तवर्धमान-नामधारक श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महलों के भीतर पलने में, वर्धमान थे झूल रहे।
संजय विजय नाम के मुनिवर, शंका में थे कूल रहे॥
उसी मार्ग से गुजरे मुनिवर, दर्शन से समाधान हुआ।
नाम रखा 'सन्मति' बालक का, जगति में सम्मान हुआ॥3॥

ॐ ह्रीं शैशव-काले संजय-विजय-मुनीद्वयो शंका-समाधाने सन्मति-नाम-उद्घोषिता श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रोधित होकर गज गलियों में, मचा रहा था वह उत्पात।
गिरते पड़ते प्रजाजनों में, भयकारी था अति संताप॥
वर्धमान घर बाहर आए, गज को तत्क्षण शांत किया।
कुंजर ने वन्दन जब कीना, 'अतिवीर' जन नाम दिया॥4॥

ॐ ह्रीं नगरमध्ये गजोपद्रवशान्तकरणसमर्थाय नगरवासिन्ये श्री अतिवीर-नाम-प्रदत्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महाभयंकर नागराज का, रूपधरा संगम आया।
वर्धमान की करूँ परीक्षा, रौद्र रूप था दिखलाया॥
फण ऊपर क्रीड़ा करते वे, नाग देव का मान हरा।
'महावीर' शुभ नाम पुकारा, चरणों का बहुमान करा॥5॥

ॐ ह्रीं संगमदेव, बाल, क्रीड़ा, समये शक्ति, परीक्षा, काले भय-विजिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के सम्मुख आते ही कई, मनोकामना पूर्ण हुए।
धन भूमि सुत पद यश पावे, बाधाएँ कई चूर्ण हुए॥
'मंशापूर्ण महावीर' शुभ, नाम धरा जयकार किया।
'जीवन आशा' फलीभूत हो, सेवा कर उद्धार किया॥6॥

ॐ ह्रीं धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष-चतुः पुरुषार्थफल-प्राप्तिकारकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे॥7॥

ॐ ह्रीं पंचनामधारी-मंशापूर्ण-महावीर-जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचम वलय-दीक्षाराधना

(पंचम-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

यौवन वैभव सुन्दरता पा, नहीं राग में मस्त हुए।
पूर्व जन्म की स्मृति पाकर, क्षण भर में सन्यस्त हुए॥
लौकान्तिक देवों ने आकर, वैराग्य भाव को पुष्ट किए।
महावीर प्रभु योगधार कर, मन ही मन संतुष्ट हुए॥1॥

ॐ ह्रीं जाति-स्मरण-कृत-वैराग्यप्रगटोत्सवप्राप्त-श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उगता सूरज झिलमिल झिलमिल, चमक दिखाता पानी में।
वैसे वैभव धन पद पाकर, इठलाता क्यूं जवानी में॥
जो पाया वह जाएगा यह, सत्य सदा शाश्वत मानो।
उपयोगी बन योगी बनकर, निज आतम को पहचानो॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हंमय-जीवन-प्राप्तये श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यौवन की अरुँणाभ लिये प्रभु, युवराज पद पाया है।
सुन्दर वर श्री वर्धमान है, सबका मन ललचाया है॥

शादी का बन्धन दुखकर है, मन ही मन में जान लिया।
बाल ब्रह्मचारी रहना ही, मन ही मन में ठान लिया॥3॥

ॐ ह्रीं अखण्डबालब्रह्मचारीपदधारकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रिश्ते नाते वैभव सत्ता, जीते जी की माया है।
आयु का क्रम पूरा होते, विनशे क्षण में काया है॥
माया छाया इस आतम को, भव भव में भटकाते हैं।
संयम धर सत्कृत्य करे हम, जीवन धन्य बनाते हैं॥4॥

ॐ ह्री संसारसंतति-विनाशनाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देव इन्द्र वैराग्य समय पर, प्रभु के सम्मुख आया है।
मैं दीक्षा वन ले चलता हूँ, यही भाव दर्शाया है॥
संयम की महिमा अति न्यारी, देव इन्द्र भी तरस गया।
शिविका ले संयम अधिकारी, पुण्य नरों पर बरस गया॥5॥

ॐ ह्रीं वैराग्यकाले-दीक्षावन-संन्यासावसरे वैराग्यभावनाप्रवणाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वस्त्र तजा आभूषण तजकर, पंच मुट्ठी कच लोच किया।
सिद्धों को वे नमस्कार कर, वेश दिगम्बर बोध लिया॥
यथाजात मुद्रा में रहकर, यथाख्यात चारित्र वरा।
परम पूज्य जग श्रेष्ठ धर्म पा, निज आतम पवित्र करा॥6॥

ॐ ह्रीं सर्वसावद्यविरतयथाजातमुद्राधारणाय मंगसिरवदी-दशमी-तपोमंगल-मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँच महाव्रत धारण करके, पंचेन्द्रिय निरोध करें।
सप्त गुणों का पालन करते, षट् आवश्यक बोध धरें॥
मूलगुणों से भूषित होकर, निज आतम श्रृंगार किया।
महावीर की मौन साधना, जगति का उद्धार किया॥7॥

ॐ ह्रीं मूलगुणधारणसमर्थाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जंगल जंगल ग्राम नगर जा, कुछ कुछ दिन का वास किया।
गृहस्थ धर्म की शिक्षा देने, चर्या की उपवास किया।।
चन्दन का बन्धन भी टूटा, महामुनि आहार किया।
नारी शक्ति को जागृत कर, भिक्षा ले उद्धार किया।।8।।

ॐ ह्रीं गृहस्थधर्मप्रतिपादकाय सर्वजीवउद्धारकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारह वर्षों तक तप करके, आत्मान्वेषण करते हैं।
महामुनि श्री महावीर जी, ध्यान मग्न ही रहते हैं।।
मैं एकाकी मेरा कुछ ना, मैं मेरा कर्त्ता धर्त्ता।
जैसा कर्म यहाँ पर करता, वैसा फल उसका मिलता।।9।।

ॐ ह्रीं मुनिधर्मप्रतिपादकाय निजात्म भावनाप्रवणाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ध्यान धुरन्धर महावीर ने, ध्यान लगाया पद्मासन।
तभी रुद्र क्रोधित हो करके, कष्ट दिया निज मन भावन।।
महामना महावीर प्रभु को, विचलित ना वह कर पाया।
चरणों में झुक वन्दन करके, करनी पर वह पछताया।।10।।

ॐ ह्रीं अतिमुक्तक-रुद्र-कृतोपसर्ग-विजिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें।।
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी।।11।।

ॐ ह्रीं दिगम्बर-दीक्षा-साधनावसरे श्री-मंशापूर्ण-महावीर-तीर्थंकराय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठम वलय-ज्ञानाराधना

(षष्ठम-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

चार ज्ञान के धारी वीरा, ऋद्धि तिरेसठ को पाए।
निज चैतन्य गुणों में रमते, स्वयं स्वयंभू कहलाए।।
वर्धमान बन निज स्वरूप में, वर्धमान बढ़ते जाए।
ऋजुकुला के तट पर आकर, केवलज्ञान के दीप जलाए।।1।।

ॐ ह्रीं ऋजुकूलानदीतटे बैसाखसुदी-दशमी-केवलज्ञान-मंडिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरणी कर्म विनाशे, महावीर ने धर कर ध्यान।
मति श्रुत अवधि ज्ञान तजा, और तजा मनपर्यय सुज्ञान।।
सीमातीत ज्ञान को पाकर, कहलाए सर्वज्ञ महा।
चरण कमल में अर्घ चढ़ाऊँ, बनने को आत्मज्ञ यहाँ।।2।।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणकर्मविनाशकाय अनन्तज्ञानगुणप्रगटिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निद्रा निद्रा-निद्रा प्रचला, प्रचला-प्रचला कर्म कहा।
बड़बोले कई काम करे, वह स्त्यानगृद्धि है कर्म महा।।
चक्षु अचक्षु अवधि केवल, दर्शनावरण नशाया है।
महावीर प्रभु आत्म दर्श कर, अनन्त दर्शन पाया है।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनावरणकर्म-रहिताय अनन्त-दर्शन-गुण-विलसिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्दर्शन में बाधक है, कर्म मोहनीय विकट रहा।
यम नियम ना व्रत को लेवें, चारित्र मोहनीय निकट रहा।।
पूर्व जन्म के संस्कार से, सम्यग्दर्शन साथ रहे।
यथाख्यात चारित्र को पाकर, महावीर जन नाथ कहें।।4।।

ॐ ह्रीं मोहनीयकर्मरहिताय अनन्तसुखगुणधारकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाधा डाले सत्यकार्यों में, अन्तराय दुखकारी है।
श्रेष्ठ कार्य में विघ्न पड़े तो, लगता दुख अति भारी है॥
दान लाभ या भोगोपभोग, वीर्य नाम का कर्म बली।
महावीर प्रभु इन्हें नाशकर, पूज्य बने हैं कर्म दली॥5॥

ॐ ह्रीं अन्तरायकर्म-विनाशनाय अनन्तवीर्यगुणप्रगटिताय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर का अतिशय अद्भुत, प्रगटित जब हो केवल ज्ञान।
कुशल क्षेम हो जाता क्षण में, सौ योजन तक का परिमान॥
मन वच तन का कई दूषण तो, सहज भाव से कम होता।
समवशरण के अन्दर जाकर, मन समकित पावन होता॥6॥

ॐ ह्रीं सर्व-जीव-कुशल-मंगल-करणाय शत-योजन-सुभिक्ष-ज्ञानातिशय-समकित-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धरती से प्रभु पाँच हजारा, ऊपर चलते गगन गमन।
देव इन्द्र हर्षित होकर के, वन्दन करते प्रभु चरण॥
चरण कमल तल कमल बिछाते, पग धरते प्रभुवर जिस ओर।
सुन्दर मनहर दृश्य सभी लख, श्रद्धा से नत भाव विभोर॥7॥

ॐ ह्रीं प्रशस्तविहायोगति-प्राप्त-गमन-गमनत्व-केवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में पद्मासन या, खड़्गासन में प्रभु रहते।
चारों दिश में मुख अम्बुज के, सर्व प्राणी दर्शन करते॥
धन्य धन्य वे भाग्य सराहें, जिनदर्शन सम्मुख पाकर।
दिव्य रूप लख दिव्य भाव पा, आतम हित करते आकर॥8॥

ॐ ह्रीं सर्वजीवाकर्षकचतुर्मुख-रूप-दर्शनकेवलज्ञानातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणा की धारा बहती है, जिनवर के तन से हर क्षण।
अभयदान पाकर हर प्राणी, नत मस्तक है प्रभु चरण॥

भावदया का हृदय जगाकर, तीर्थंकर विहार करें।
सर्वरोग दुख शोक मिटाकर, अतिशय मय उद्धार करें॥9॥

ॐ ह्रीं दयार्द्र-चित्त-गुण-प्रस्फुटिताय सर्व-जीव-वधावरोधकाय-केवलज्ञाना-तिशयगुणपरिपूरिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ज्ञान की ज्योति प्रगटी, तिमिर हटा उपसर्गों का।
मिथ्या दृष्टि क्रूर जीव भी, मार्ग चुने अपवर्गों का॥
अतिशय वीर प्रभु का प्रगटा, केवलज्ञान प्रगट होते।
प्रभु चरणों की पूजा कर लो, निर्मल भाव निकट होके॥10॥

ॐ ह्रीं सर्वोपसर्गनिवारकाय उपसर्गाभावकेवलज्ञानातिशयगुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

परमौदारिक देह बनी तब, अन्नाहार न लेते हैं।
कवलाहार रहित होकर वे, कर्मायु से जीते हैं॥
चर्या की मर्यादा ने यह, अतिशय दिव्य प्रदान किया।
महावीर की पूजा करके, जीवन का कल्याण हुआ॥11॥

ॐ ह्रीं अशनशुद्धिगुणवर्धनाय कबलाहाराभावरूपाय केवलज्ञानातिशय-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानावरण करम के छँटते, भीतर की प्रज्ञा जागी।
सर्व विद्या के ईश बने प्रभु, सर्व अविद्या है भागी॥
केवलज्ञानी जिनवर का यह, अतिशय दिव्य महान हुआ।
गौतम स्वामी चरणों में आ, गणधर-सा विद्वान हुआ॥12॥

ॐ ह्रीं अविद्या-विध्वंसकाय सर्वविद्येश्वरताकेवलज्ञानातिशयगुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तन का केश नहीं नख बढ़ता, स्थिर वर्षों तक रहता।
श्वेत श्याम यह दोनों वस्तु, अन्तिम धरती पर रहता॥
केवलज्ञानी का यह अतिशय, स्थिरता को दर्शाता।
प्रभुवर की पूजा जो करता, स्थिर होकर हर्षाता॥13॥

ॐ ह्रीं स्थिर-बल-बुद्धि-प्रदायकाय नख-केश-वृद्धि-रहित-केवलज्ञानातिशय-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आशाओं का हुआ खात्मा, नासा दृष्टि धार लिया।
पलक झपकना बन्द हुआ प्रभु, अपना तो उद्धार किया।
न आशा हो जीवन में प्रभु, तेरी ज्योति पाना है।
अतिशय-धारी की पूजा कर, सारे कर्म नशाना है॥14॥

ॐ ह्रीं अनिमेष-गुण-प्रगटाय पलक-स्पन्द-रहित-केवलज्ञानातिशय-गुण-विभूषिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूर्य चन्द्र से ज्यादा जिनवर का, जगति में तेज प्रकाश।
छाया माया रहित हुए प्रभु, चार घातियाँ कर्म विनाश॥
तेरी छत्र छाया में प्रभु, निज आतम उद्धार करूँ।
चरणों में शुभ द्रव्य चढ़ाकर, शुद्ध भाव विस्तार करूँ॥15॥

ॐ ह्रीं भगवत्त्छत्र-छाया-प्राप्तकाय छाया-रहित-केवलज्ञानातिशय-गुण-मण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

दश अतिशय को पाय कर, मौन रहे जिन नाथ।
नरदेवा विस्मित रहे, कारण ना हो ज्ञात॥
बीते दिन छयासठ यहाँ, गौतम स्वामी आए।
दीक्षा धारण कर लिया, दिव्य ध्वनि प्रकटाय॥16॥

ॐ ह्रीं श्रावण-कृष्ण-प्रतिपदायां दिव्यध्वनिप्रस्फुटिताय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य ध्वनि से पावन वाणी, सात शतक भाषा खिरती।
भाष अठारह महारूप कह, जन मन तिमिर सदा हरती॥
केवलज्ञानी महावीर की, वाणी जन कल्याणी है।
गणधर द्वारा आगम में आ, होती माँ जिनवाणी है॥17॥

ॐ ह्रीं द्वादशांगरूपसर्वभाषात्मकदिव्यध्वनि-केवलज्ञानातिशय-गुणप्रगटाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर की महिमा न्यारी, कदम पड़े, जिस धरती पर।
जन्म-जात शत्रु हो प्राणी, धरे मित्रता जगति पर॥

अतिशय देवों द्वारा होता, मन की कलियाँ खिल जाती।
अर्घ चढ़ाकर चरण तुम्हारे, मन की खुशियाँ मिल जाती॥18॥

ॐ ह्रीं सर्वशत्रुभावनिवारकाय सर्वजनमैत्रीभावातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वच्छ गगन हो चंदोवा-सा, मस्तक ऊपर शोभित है।
यश की चादर ताने देवा, भक्ति भाव से मोदित है॥
तीर्थंकर पद की निर्मलता, स्वच्छ गगन है दर्शाती।
प्रतिक्षण प्रभु की वन्दना करके, धर्म भाव को विकसाती॥19॥

ॐ ह्रीं सर्वदिशयशविस्तारकाय निर्मलव्योमातिशयगुणमण्डिताय श्रीमंशापूर्ण-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर जिस मारग से गुजरे, षट् ऋतु के फल-फूल खिलें।
सुखे मुरझाए तरुवर भी, हरी भरी अनुकूल मिले॥
महावीर की महिमा भारी, जग को विस्मित करती है।
अतिशय लखकर भव्य जीव के, मन में भक्ति जगति है॥20॥

ॐ ह्रीं सर्वजन-मनाकांक्षा-परिपूरिताय षट्ऋतु-फल-पुष्पातिशय-गुणमण्डिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट दिशाएँ निर्मलता पा, प्रभु महिमा बतलाती हैं।
निर्मलता ही दशा बदलती, मन शक्ति प्रगटाती है॥
देवों द्वारा अतिशय प्यारा, महावीर ने पाया है।
सुखमय वातावरण को पाकर, धार्मिक जन हर्षाया है॥21॥

ॐ ह्रीं अष्टदिशामंगलाय निर्मलदिशा-देवोपुनीतातिशयाय श्रीमंशापूर्ण-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव्य जीव के पुण्योदय से, तीर्थंकर विहार करें।
देव इन्द्र भक्ति दर्शाने, भू-दर्पण निर्माण करें॥
इक योजन तक चमचम चमचम, धरती दर्पण-वत् चमकी।
महावीर के समवशरण की, महिमा सारे जग महकी॥22॥

ॐ ह्रीं सर्वकंटकनिवारणाय योजनप्रमाण-दर्पणवत्-भूमिशोभिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के श्री विहार में, स्वर्ण कमल रचना रचते।
देव सदा भक्तिमय होकर, प्रभु चरणों में नत रहते॥
जिनवर अंगुल चार ऊर्ध्व रह, कदम कदम बढ़ते जाते।
प्रमुदित नर देवा सब चलते, नाच नाच चित उमगाते॥23॥

ॐ ह्रीं नरकतिर्यञ्चगतिभ्रमणनिवारणसमर्थाय चरण-कमल-तले-स्वर्ण- कमल रचनातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु विहार का उत्सव भारी, जय जय जय का नाद हुआ।
भक्ति भाव से आराधन कर, मन में अति आह्लाद हुआ॥
मुनि आर्यिका नर अरुँ नारी, देव पशु सब हर्षित हैं।
जय जय-कार प्रभु का होता, शत इन्द्रों से वन्दित हैं॥24॥

ॐ ह्रीं दिव्य-जयनाद-मण्डिताय आह्लादकरणाय देवोपुनीतातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मन्द-मन्द वायु का चलना, आनन्दित तन को करता।
खेद कष्ट न रहता उस क्षण, समवशरण जब है लगता॥
अतिशय देवों द्वारा प्यारा, भू अम्बर पर दिखता है।
महावीर के चरण कमल में, अर्घ समर्पित करता है॥25॥

ॐ ह्रीं श्रम-खेद-कष्टहराय परमानन्दसमर्थकाय मन्दपवनातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के गगन गमन में, गन्धोदक वृष्टि होती।
रोग शोक भय बाधा विनशे, अन्तस में तृप्ति होती॥
मेघ कुमार के देव सदा ही, प्रभु की सेवा यूँ करते।
महावीर का अतिशय अनुपम, अवसर को हम क्यूँ तजते॥26॥

ॐ ह्रीं सर्वरोगशोक-भय-बाधानिवारकाय दिव्य-गन्धोदकवृष्टि- देवोपुनीतातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंकड़ पत्थर धूलि कंटक, पथ की बाधा कहलाती।
तन मन को पीड़ा देकर के, अवरोधक है बन जाती॥

तीर्थंकर का अतिशय सुन्दर, पवनपति क्षण में आए।
स्वच्छ मार्ग क्षणभर में करके, प्रभु चरणों में चित लाए॥27॥

ॐ ह्रीं सर्ववातादि-रोगनिवारकाय वायुकुमारदेवोपुनीतातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समवशरण में जिनवर सम्मुख, धर्म चक्र आगे रहता।
यक्ष देव मस्तक पर लेकर, हर्षित हो आगे बढ़ता॥
महावीर के धर्म तीर्थ को, सारे जग में फैलाता।
अर्घ्य चढ़ाकर पूजा कर लूँ, पाने अक्षय सुख साता॥28॥

ॐ ह्रीं सद्धर्मवर्धनाय यक्षेन्द्रमस्तकोपरी-धर्मचक्रप्रवर्तनाय देवोपुनीतातिशय-युक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेज पुँज-सी कान्ति मनहर, महावीर की छटा महान।
गुणवत्ता आकर्षित करती, चाहे मिथ्या दृष्टि महान्॥
दर्शन का सुख अद्भुत अनुपम, आप ओर ही खींच रहा।
हर्षमयी सृष्टि को करके, धर्म नीर से सींच रहा॥29॥

ॐ ह्रीं स्वाभाविकहर्षातिरेकातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्रायः नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंगल जिनवर मंगलकारी, सर्व अमंगल हरते हैं।
प्रतिहार्य भी आठ सजे हैं, मंगल द्रव्य भी रखते हैं॥
प्रतिहार्य जिनवर की शोभा, वसुमंगल शुभ कारक हैं।
मंशापूरण महावीर की, भक्ति दुक्ख निवारक है॥30॥

ॐ ह्रीं सर्वमंगलपरिपूरिताय वसुमंगलद्रव्यसमन्विताय देवोपुनीतातिशयाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पादप सुन्दर हरा भरा है, उन्नत छवि दर्शाता है।
जिनवर उसके नीचे तिष्ठे, शोक सभी हर जाता है॥

प्रातिहार्य जिनवर का पहला, नाम अशोक कहाता है।
भक्ति ध्यान कर पूजा कर लो, धर्म भाव बढ़ जाता है॥31॥

ॐ ह्रीं सर्वशोकनिवारणाय अशोकवृक्षप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्ण-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मासन सिद्धि का आसन, महावीर ने धार लिया।
कर्म नाश कैवल्य प्राप्त कर, आतम का श्रृंगार किया॥
रत्नमयी सुन्दर सिंहासन, देवों द्वारा निर्मित है।
अंगुल चार विराजे ऊपर, वन्दन अर्घ समर्पित है॥32॥

ॐ ह्रीं पूज्यपदप्रदायक-सिंहासनप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील गगन-सा छत्र मनोहर, त्रयरत्नों से शोभित है।
पाप ताप संताप निवारक, तीन लोक मनमोदित है॥
त्रिभुवन का आकार लिए वह, त्रिभुवन स्वामी दर्शाता।
तीन लोक के सर्व जीव को, छत्र छाया दे हर्षाता॥33॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनतिलकपदविराजिताय छत्रत्रयप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौंसठ ऋद्धि के स्वामी प्रभु, नम्रभाव से भरे हुए।
नम्रीभूत सब देव प्रभु पर, ढोरे चँवर सब खड़े हुए॥
झुकते उठते निकट सदा ही, विनय भाव प्रगटाते हैं।
जितना झुकते उतना उठते, सम्यग्ज्ञान सिखाते हैं॥34॥

ॐ ह्रीं सर्वजन-विनय-शिक्षा-प्रदायकाय चतुषष्ठिचामरप्रातिहार्य-संयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दिव्य पुष्प की वृष्टि करते, देव अंजुलि भर भरके।
भव्य सुगन्धित वायु बहती, परस प्रभु का तन करके॥
गुण गरिमामय पुष्प खिलाऊँ, अन्तर्मन की भक्ति से।
समवशरण की पूजा कर लूँ, हृदय कमल की शक्ति से॥35॥

ॐ ह्रीं हृदयकमलविकासनहेतवे पुष्पवृष्टि-प्रतिहार्य-संयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोहिनूर फीका पड़ जाता, जिनकी चमक चाँदनी से।
सात भवों का ज्ञान कराता, भामण्डल सब सादगी से॥
क्या थे हम क्या होवेंगे यह दर्पण सम झलकता है।
भामण्डल का आभामण्डल, प्रभु पृष्ठ दमकता है॥36॥

ॐ ह्रीं आभामण्डलविस्तारकाय भामण्डलप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर के श्री विहार में, दुन्दुभि यश का गान करे।
दशों दिशा में प्रमुदित होकर, तेरा ही सम्मान करे॥
गगन मार्ग में जैनधर्म की, त्याग पताका फहरावे।
आओ प्रभु का दर्शन कर लो, वीतराग पथ अपनावे॥37॥

ॐ ह्रीं जिनधर्मप्रभावनायैः दुन्दुभिप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सर्व जीव की भाषा में ढल, दिव्यध्वनि खिर जाती है।
मोक्ष महल का मार्ग बताकर, निज कल्याण कराती है॥
समवशरण में भव्य जीव को, हितकर सत्संदेश दिया।
निज प्रभुता को जानो भव्यों, करुणामय उपदेश दिया॥38॥

ॐ ह्रीं सर्वप्राणी-कल्याणकारक-दिव्यध्वनिप्रातिहार्यसंयुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥39॥

ॐ ह्रीं समवशरण विराजित द्वादश सभा मध्ये चतुर्मुखी जिन विराजित श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तम वलय-देशनाराधना

(सप्तम-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गौतम स्वामी चरणों में आ, निज अभिमान मिटाया है।
निर्मल परिणामी हो करके, जिन दीक्षा को पाया है।।
गणधर पद आसीन हुए, तब दिव्य ध्वनि खिर जाती है।
गुरु पूर्णिमा वीर का शासन, महत्वपूर्ण कहलाती है।।1।।

ॐ ह्रीं गौतमस्वामी-प्रमुखगणधरपदस्थिताय दिव्यध्वनिप्रदर्शकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सात तत्व को जानकर, श्रद्धा मन में धार।
सम्यग्दर्शन प्रगट कर, कर लो निज उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं सम्यकदर्शनप्राप्तये सप्ततत्त्वोपदेशकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छः द्रव्यों की शक्ति से, चलता है ब्रह्माण्ड।
अपनी अपनी शक्ति में, सब ही है प्रकाण्ड।।3।।

ॐ ह्रीं षट्द्रव्योपदेशकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावना से भाव का, होता है संयोग।
भावें बारह भावना, जागृत होवे योग।।4।।

ॐ ह्रीं वैराग्यभावप्रकाशकाय द्वादशभावनायैः श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अहिंसा सत्य का, करुणामयी सन्देश।
तज चोरी अब्रह्म को, परिग्रह का ना लेश।।5।।

ॐ ह्रीं अहिंसा-सत्य-अचौर्य-ब्रह्मचर्या-परिग्रहव्रतप्रतिपादकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावक के षट् कर्म का, पालन करना धर्म।
जो कर्त्तव्य सदा करे, पावे निज का मर्म।।6।।

ॐ ह्रीं श्रावकोचित-षट्कर्त्तव्योपदेशकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अणुव्रती या महाव्रती, बनना ही उद्देश्य।
महावीर का श्रेष्ठतम, एकमात्र उपदेश।।7।।

ॐ ह्रीं अणुव्रत-महाव्रत-धारणशक्तिसमर्थाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आर्त रौद्र अरुँ धर्म शुक्ल, ध्यान चार प्रकार।
दो धारो दो छोड़ दो, करो आत्म उद्धार।।8।।

ॐ ह्रीं आर्त्तरौद्रध्यानविवर्जिताय धर्म-शुक्ल-ध्यान-प्राप्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीर-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रतिमा से प्रतिभा जगे, श्रावकोत्तम पुरुषार्थ।
ग्यारह प्रतिमा धारकर, साधो निज परमार्थ।।9।।

ॐ ह्रीं आत्म-प्रतिभा-जागृताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शनमय अरुँ ज्ञान मय, जीवो का उपयोग।
चार आठ के भेद से, चेतन का संयोग।।10।।

ॐ ह्रीं आत्मदर्शनज्ञानोपयोगाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सैनी असैनी जीव से, भरा हुआ संसार।
इस बंधन को तोड़कर, खोलो मुक्ति द्वार।।11।।

ॐ ह्रीं संज्ञी-असंज्ञी-पर्यायरहिताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण स्थान औ मार्गणा, चोदह जीव प्रकार।
संसारी साकार हैं, सिद्ध जिन निराकार।।12।।

ॐ ह्रीं गुणस्थानमार्गणा जीव-स्वरूपकाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ कर्म के योग से, जीव भ्रमें संसार।
अष्ट कर्म को नष्ट कर, आत्म शुद्ध आधार।।13।।

ॐ ह्रीं अष्टकर्म-विनाशनाय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्यं

अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥14॥

ॐ ह्रीं दिव्य, देशना, प्रदायकाय श्री, मंशापूर्ण, महावीर, तीर्थंकराय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टम वलय-मोक्षाराधना

(अष्टम-वलय-मण्डलस्योपरी पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

तीस वर्ष तक भव्य जीव के, पुण्योदय से भ्रमण करें।
धर्म दान संयम प्रदान कर, जीवों के भव भ्रमण हरें॥
श्रेणिक मेढक चन्दन बाला, का प्रभु ने उद्धार किया।
अन्त काल में योग निरोधकर, स्थिरता स्वीकार किया॥1॥

ॐ ह्रीं त्रिंशत्वर्षपर्यन्तसमवशरणविहारधर्मसंयमप्रदायक श्रीमंशापूर्णमहावीर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवन की शुचि चादर में प्रभु, व्यसनों का बहुदाग लगा।
तव दर्शन की शुभ्र वारि से, तन मन का कालुष्य मिटा॥
भावों का शुभ परिवर्तन ही, सर्व विघ्न का नाश करे।
मंशापूरण महावीर जी, मम दुर्गुण का ह्रास करें॥2॥

ॐ ह्रीं व्यसन-मुक्ति-जीवनार्थे पवित्रभावजागृताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अन्धकारमय जीवन सारा, तव दर्शन से ज्योति जली।
कर्म श्रृंखला अशुभ पाप की, धीरे धीरे सारी टली॥
भेदज्ञान संयम श्रद्धा से, पुण्य कर्म बढ़ जाता है।
शुद्ध शुक्ल जब ध्यान मग्न हो, पुण्य पाप नश जाता है॥3॥

ॐ ह्रीं सर्व-पुण्य-पाप-कर्म-रहिताय योग-निरोधत्रयोदश्यां तिथौ श्रीमंशापूर्ण महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय भोग सदा चाहा प्रभु, इन्द्र समा ना भक्ति की।
परस गन्ध रस शब्द में फँसकर, तन सुख की आसक्ति की॥

आज आपका रूप लखा प्रभु, निज स्वरूप का भान हुआ।
मंशापूरण महावीर की, पूजा से कल्याण हुआ।।4।।

ॐ ह्रीं इन्द्रिय-सुख-भोग-विसर्जिताय रूपातीतध्यानस्थितिताय रूप-चतुर्दश्यां श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल ध्यान में स्थिर होकर, कर्म अघाति विनशावें।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति में रम, निराकारता प्रगटावें।।
कार्तिक कृष्णा के अन्तिम क्षण, पावापुर से गए निर्वाण।
अर्घ चढ़ाऊँ मोद मनाऊँ, मम आतम का हो कल्याण।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिकवदी अमावस्या मोक्षमंगल-मंडिताय पावापुर-पद्म सरोवरमध्ये सर्व-कर्म-विमुक्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर का शासन अनुपम, निराबाध चलता आया।
गौतम जम्बू सुधर्मस्वामी, अनुबद्ध केवली पद पाया।।
फिर मुनिवर की चली श्रृंखला, वीरांगज तक बनी रहे।
भक्ति भाव से अर्घ चढ़ाऊँ, मम श्रद्धा यूँ जमी रहे।।6।।

ॐ ह्रीं महावीर-निर्वाण-पश्चात्-गौतम-जम्बु-सुधर्मास्वामी-अनुबद्ध-केवली-भद्रबाहु श्रुत-केवली-तत्पश्चात्-वीरागंज-पर्यंत-सर्व-मुनिवरेभ्यः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती।।
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान।।7।।

ॐ ह्रीं मंगसिर सप्तयां तिथौ भूगर्भ-प्रगटिताय दिव्य-दर्शनाय श्रीमंशापूर्ण-महावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य

भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है।।

हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्‌भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा।।8।।

ॐ ह्रीं अविनाशी-सिद्ध-सुख-प्राप्ताय श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय नमः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्पूर्णार्घ्य

सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो।।
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो।।
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो।।9।।

ॐ ह्रीं जिनशासन नायक श्री मंशापूर्ण महावीर तीर्थंकराय नमः सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप- ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं मंशापूर्ण-महावीर-जिनेन्द्राय-सुख सौभाग्यं कुरु कुरु नमः।

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्‌भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार।।

जयमाला

जय वीरा बन्दो महान, जय स्याद्‌वाद सूरज जहान।
जय कर्म विजेता आत्म धीर, जय निजानंद सब हरत पीर।।1।।

जय पंच नाम धारी कहाय, जय वर्धमान गुण गण बढ़ाय।
जय न्यहवन समय में श्वास लीन, जय वीर नाम सुरेन्द्र दीन।।2।।

दो मुनि ने देखा बाल रूप, फिर नाम रखा सन्मति अनूप।
गजराज उपद्रव करता आय, अतिवीर नाम जय करके पाय।।3।।

देवों ने बल का यश गाया, संगम तत्क्षण धरती आया।
खेले बालक जिस वृक्ष पास, विकराल धरा था रूप नाग।।4।।

भय से भागे सारे बालक, पर वर्धमान सबके पालक।
नागों पर मुष्ठी प्रहार किया, तत्क्षण संगम मनुहार किया।।5।।

तुम अद्‌भुत बलशाली महान, गुणशाली धरा महावीर नाम।
प्रभु नाम में शक्ति है अनन्त, जो जपता कटते कर्म बन्ध।।6।।

भई तीस वर्ष की उम्र आप, छोड़े जग झंझट राज पाठ।
तप बारह वर्ष महा कीना, सब घाति कर्म भगा दीना।।7।।

प्रभु समवशरण रचना महान, दर्शन पा भक्त करे प्रणाम।
दिन पर दिन छयासठ बीते, प्रभु वाणी बिन रीते रीते।।8।।

तब इन्द्रभूति गौतम आया, प्रभुदर्श किया चित उमगाया।
पहले ही दर्शन का प्रभाव, सब वस्त्र तजा पाया स्वभाव।।9।।

पाँच शतक थे शिष्य आय, केशलोंच करी दीक्षा सुपाय।
श्री महावीर वाणी थी खिरी, सब भव्य जनों पर है बिखरी।।10।।

चहुँ ओर धरम विस्तार हुआ, प्रभु सत्य अहिंसा प्रचार हुआ।
प्रभु मूरत गढ़ पूजा करते, निधत्त निकाचित क्षय करते।।11।।

धीरे धीरे बहुकाल गया, घट बढ़ता धर्म सँभाल लिया।
आतंकी ने मन्दिर तोड़ा, प्रभु ने भू से नाता जोड़ा।।12।।

वर्षों पर वर्षों बीत गए, प्रभु धरती के ही मीत हुए।
सात नवम्बर शुभ दिन आया, झाड़ली में प्रभु दर्श दिखाया।।13।।

भक्तों ने प्रभु दर्शन कीना, खुशियों से जयकारा कीना।
तभी भक्त गुरु सम्मुख आए, महावीर तस्वीर दिखाए।।14।।

सौरभ सागर ने रूप लखा, कुछ अतिशय ऐसा भाव जगा।
मंशापूरण जाप किया है, प्रतिमा का सानिध्य लिया है।।15।।

गुरु भक्तों ने साथ निभाया, प्रतिमा गाजियाबाद है लाया।
पुण्य उदय भक्तों का आया, गंगानगर में दर्श दिखाया॥16॥

प्रतिमा से आवरण हटाया, इन्द्रों ने बरसात कराया।
सन अठारह माह जुलाई, रथ यात्रा से करी विदायी॥17॥

धूम-धाम से चली सवारी, प्रभु विहार की शोभा न्यारी॥
गंगनहर के एक किनारे, मंशापूरण वीर पधारे॥18॥

दिव्य शान्त है मूरत तेरी, दर्शन से मिटती भव फेरी।
जो भी मन से ध्यान लगाता, मंशापूर्ण फल मिल जाता॥19॥

भक्ति भाव से ज्योति जलावे, सब संकट को दूर भगावे।
महावीर जयमाला गावे, सुख शान्ति समृद्धि पावे॥20॥

ॐ ह्रीं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता – **जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।**
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋिद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

सूतक पातक के चक्कर में, धर्म कार्य ना तुम तजना।
खुशी शोक तो कर्मोदय है, उससे नाता कम रखना॥
घर में जन्म-मरण होवे तो, कुछ दिन शान्त रहा करना।
सांसारिक क्रिया को करके, धर्म मार्ग से फिर जुड़ना॥

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 35

प्रशस्ति

जैन धर्म के शासन नायक, वर्धमान महावीर महान।
विश्व शांति के अग्रदूत का, भक्त सभी करते गुण गान॥१॥

पुण्योदय से भूप्रगटित जिन, प्रतिमा का दर्शन पाया।
मंशापूरण तीर्थ बनेगा, दुखियों को देने छाया॥२॥

सौ बीघे की वृहद भूमि पर, सेवा तीर्थ बना प्यारा।
प्रतिमा की पूजा कैसे हो, बही भाव अमृत धारा॥३॥

रात्रि में प्रभु सम्मुख जाकर, चरणों ध्यान लगाया है।
वीरायण की धारा फूटी, अद्भुत आनंद पाया है॥४॥

सन अठारह माह जुलाई, रथयात्रा का भाव जगा।
विदा पूर्व मेरठ नगरी में, महावीर विधान रचा॥५॥

आठ वलय में महावीर की, जीवन गाथा गाया है।
भव कल्याणक नाम देशना, शतक अर्घ चढ़ाया है॥६॥

गंग नहर डिडौली ग्राम में, मंशापूर्ण विराजित है।
अतिशय वास्तु शुद्ध शिला से, मंदिर दिव्य प्रकाशित है॥७॥

कैलाश नगर दिल्ली में जाकर, पाठ विशाल रचाया है।
वर्धमान सेवक मंडल ने, पूरा भार उठाया है॥८॥

महावीर का जन्म कल्याणक, महावीर का पार्क मिला।
मंशापूरण महावीर की, प्रथम भक्ति का पुण्य खिला॥९॥

त्रिदिवसीय विधान रचाकर, महावीर का गुण गाया।
मंशापूरण महावीर का, यश सारा दिल्ली गाया॥१०॥

सन अठारह एक चौमासा, मंशापूर्ण महावीर किया।
दिवस बहत्तर पाठ कराकर, एक नया इतिहास दिया॥११॥

छः राज्यों के भक्त जनों ने, अद्भुत पुण्य कमाया है।
दिवाली पर चौबीस मंडलीय, वृहद विधान रचाया है॥१२॥

जीवन आशा अस्पताल से, सेवा का क्रम चलता है।
मंशापूरण महावीर का, जैन तीर्थ प्रगटता है॥१३॥

भक्ति पूजा जाप पाठ का, अतिशय सब दुख दूर करें।
दवा दुआ का संगम प्यारा, सुख शांति भरपूर भरे॥१४॥

पुष्पदंत गुरु कृपाशीष से, रचना की क्षमता पाई।
मंशापूर्ण महावीर विधान कर, सौरभ सुरभित सुखदाई॥१५॥

आगम के त्रय अक्षर हमको "आप्त" ध्वनि बतलाते हैं।
"गणधर" द्वारा भाव ग्रन्थ रच, द्वादशांग कह जाते हैं॥
'म' अक्षर "मुनियों" का वाचक, द्रव्य ग्रन्थ प्रस्तुत कर्ता।
षट्खण्डागम के सूत्रों में, सर्वागम गर्भित रहता॥

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 6

पद से कद ना बढ़ता भव्यों, कर्तव्यों से बढ़ता है।
पद पाकर पग पग सेवा कर, वही निगाहों चढ़ता है॥
साधु सेवा जिनवर दर्शन, सदाचार मैत्री धारे।
कालान्तर में स्वयं पूज्य हो, जैन धर्म को विस्तारे॥

जैनाचार संहिता श्लोक नं. 60

श्री मंशापूर्ण महावीर चालीसा

अरिहंतों और सिद्धों को, सदा मैं मन से ध्याऊँ।
उपाध्याय आचार्यों को, भाव से शीश नवाऊँ॥
सर्व साधु वंदू सदा, जिनवाणी माँ साथ।
मंशा पूर्ण वीर जी, तुम्हीं हमारे नाथ॥

जय वीरा महावीरा स्वामी, तुम हो प्रभुवर केवल ज्ञानी।
माँ त्रिशला के उर में आए, अष्ट देवियाँ खुशी मनाए॥1॥
हीरे मोती बरसन लागे, सकल प्रजा के भाग थे जागे।
चैत्र शुक्ल त्रयोदश को जन्मे, सिद्धारथ हरषे बहु मन में॥2॥
जाति स्मरण वैराग्य जागा, तीस वर्ष में घर को त्यागा
संयम पथ पर कदम बढ़ाए, धन वैभव भी रोक ना पाए॥3॥
वैशाख शुक्ल दशमी दिन आया, केवलज्ञान का आनन्द पाया।
अष्ट कर्म का नाश किया था, कार्तिक मावस मोक्ष भया था॥4॥
पंचम काल महा दु:ख दाई, पर जो हो तेरी शरणाई।
उससे संकट दूर ही रहते, भूत प्रेत सब दूर हैं भगते॥5॥
हरियाणा इक प्रान्त है प्यारा, झज्जर निकट झाडली ग्रामा।
धरती की हो रही खुदाई, कस्सी जाकर के टकराई॥6॥
खोदत खोदत मूरत दिखाई, हैरानी और खुशियाँ छाई।
सात नवम्बर दिन पुण्यशाली, वीरा ने झोली भर डाली॥7॥
ग्रामीणों को लगे खिलौना, अर श्रावक को वीर सलोना।
चहुँ दिशि शोर मचा था भारी, भू से प्रकटे मंगलकारी॥8॥
ग्रामीणों को मूरत भाई, ना देने की रटत लगाई।
'गुरु सौरभ' ने चित्र निहारा, तभी बही अतिशय की धारा॥9॥
दर्शन को मन तरस रहा था, आ जाओ वीरा बोल रहा था॥
निसवासर वीरा को जपते, फिर भी गुरुवर जरा ना थकते॥10॥

गुरुवर की मेहनत रंग लाई, अर वीरा को खींच के लाई।
ज्ञान योगी गुरुदेव ने जाना, मंशा पूर्ण हैं भगवाना॥11॥
गुरु भक्तों ने रंग जमाया, वर्द्धमान वीरा को पाया।
29 मार्च का शुभ दिन आया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥12॥
दूर-दूर से भक्त हैं आए, वीर प्रभु का दर्शन पाए।
ये बारह सौ बरस पुरानी, महिमा इसकी सबने जानी॥13॥
मनहारी और है सुखकारी, ये वीरा हैं अतिशय कारी।
माखन ज्यों सिंदूर मिला है, ऐसा तेरा रूप खिला है॥14॥
प्रातिहार्य के मध्य विराजे, वीरा तो सूरज सम लागे।
रोग शोक भय सब भग जावे, जो श्रद्धा से शीश नवावे॥15॥
गुरु सौरभ जी भक्त तुम्हारे, मनोभाव से चरण पखारे।
दर दर की ठोकर हम खाए, आज प्रभु तेरे दर आए॥16॥
मेरा सोया भाग जगा दो, आत्म परमात्म से मिला दो।
हम संसारी मन चंचल है, पर जिनवर तू बड़ा सरल है॥17॥
वरद हस्त मम शीश पे धरना, खुशियों से झोली तू भरना।
शुद्ध भाव से जो जपता है, अन्तर का कोना खिलता है॥18॥
'आशा' ने प्रयास किया है, भक्ति भाव से भजन किया है।
सुख वैभव की वर्षा कर दो, मन में प्रेम का अमृत भर दो॥19॥
हृदय कमल पर आन विराजो, मुक्ति रमा से मिलन करा दो।
अतिशय अपना तुम दिखलाओ, वीरा हमको पार लगाओ॥20॥

पाठ करो चालीस दिन, दीपक पास जलाय।
चालीस बार अखंड कर, ले मंशा पूर्ण मनाय॥
ऋद्धि सिद्धि की निधि मिले, कमी रहे ना कोय।
रोग शोक सब दूर हो, जीवन मंगल होय॥

जाप्य मंत्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ठें ॐ मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय सुख-सौभाग्यं कुरु कुरु स्वाहा।

श्री लघु चौबीसी पूजन (विधान)

स्थापना

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥
हे शीतल प्रभु शीतल करदो, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
चौबीसों जिनराज हमारे, आज पुकारूँ करुणा धार।
अत्र पधारो हृदय विराजो, कर्म खपाओ हे अविकार॥
तीर्थंकर हे धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से पूजा करता, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति तीर्थंकर! अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

जग की ज्वाला में जल जल कर, जीवन व्यर्थ गवाया है।
जल की धारा चरण कमल दें, जन्म जरा विनशाया है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जलधारा स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

चन्दन चुटकी ले आया प्रभु, वन्दन भाव जगा करके।
शीतल सुरभित मन हो जाए, पूजा पाठ रचा करके॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, चन्दन यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

उज्ज्वल तन्दुल भाव मृदुल कर, श्री जिन सम्मुख ले आऊँ।
अक्षय निधी अक्षय संयम धर, सिद्धालय को पा जाऊँ॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, अक्षत यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अक्षय-पदप्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

हृदय कमल कोमल करुणामय, काम बाण से रहित करो।
इन्द्रिय भोग तजूँ मैं जिनवर, ब्रह्मभाव को उदित करो॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, पुष्पाञ्जलि स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

इच्छाओं को दूर भगाया, नित उपवास किया करते।
क्षुधा वेदिनी नाश करन को, अन्नपान तजा करते॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, नैवेद्यम् स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

मिथ्यातम में फँसा रहा पर, अन्तर दीप न जल पाया।
तेरी अनुपम दिव्य ज्योति से, अन्तर मन उज्ज्वल छाया॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, जगमग दीप स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

दीक्षा लेकर महा तपस्या, करते चौबीसों मुनिराज।
योग साधना निजानन्दमय, अद्‌भुत अनुभूति निजसाध॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, धूपं यह स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

तरुवर फल तन पुष्ट करावें, बाहर बढ़ता फलता है।
अन्तर मन का मोक्ष महाफल, भक्ति ध्यान से मिलता है॥
तीर्थंकर हे चौबीस जिनवर, श्रद्धा फल स्वीकार करो।
पाप ताप संताप हरण कर, जगति का उद्धार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्ष-महाफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया॥
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच कल्याणक

(चौपाई)

सोलह कारण भावना भाई, दया धर्म मन में प्रकटाई।
सोलह स्वप्न शगुन दर्शाता, पन्द्रह माह रतन बरसाता॥

तीर्थंकर का एक ही क्रम है, नाहीं संशय ना विभ्रम है।
गर्भ विषे जो जीव पला है, तीर्थंकर जग जीव भला है।।1।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो गर्भ-मंगल-मण्डिताय मम-गर्भ-दोष-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट देवीयाँ मंगल गाये, माता की सेवा चित लाये।
जन्म हुआ प्रभु का धरती पर, सुख शान्ति त्रय लोक में क्षणभर।।
देव इन्द्र सौधर्म भी आये, पाण्डुक वन अभिषेक कराये।
चिह्न लखा अरुँ नाम पुकारा, जन्म कल्याणक अति सुख कारा।।2।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जन्ममंगल-मण्डिताय मम-जन्मरोग-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगति के इन्द्रिय सुखभोगे, राज काज सब नित अवलोके।
पूर्व जन्म की यादें आई, या घटना ने भाव जगाई।।
लौकान्तिक सब देव भी आए, मनहर शिविका में बिठलाएँ।
छोड़ दिया नश्वर संसारा, भेष दिगम्बर अनुपम धारा।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो तपोमंगल-मण्डिताय मम-चारित्र-वर्धनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षों जंगल में तप कीना, कभी कभी आहार है लीना।
धर्म गृहस्थी या संन्यासी, पथ दोनों दे तप अभ्यासी।।
पद्मासन खड्गासन रहते, परिषहों को हर क्षण सहते।
शुक्ल ध्यान चउ कर्म नशाया, केवलज्ञान कल्याण मनाया।।4।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो केवलज्ञान-मण्डिताय मम-कुज्ञान-विनाशनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्रय योगों से मुक्त हुए हो, ध्यान अवस्था युक्त हुए हो।
सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति ध्याना, व्युपरत किरिया अरि सब हाना।।
अ-इ-उ-ऋ-लृ लघु शब्दा, कर्म जला तत्क्षण प्रभु सिद्धा।
निराकार चैतन्य प्रकाशी, चरण नमें पाने सुख राशि।।5।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो मोक्षमंगल-मण्डिताय मम-सर्व-कर्म विध्वंसनाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घावली

श्री आदिनाथ भगवान का अर्घ्य

आदिनाथ प्रथमेश जिन, धर्म कर्म दातार।
भव वारिधी से पार कर, मेटो मम संसार॥

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मधुरा धारी प्रभु, धर्म बढ़ावें रोज।
अजितनाथ भगवान के बन्दूँ चरण सरोज॥

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवनाथ भगवान का अर्घ्य

संभव सम भव अन्त हो, पाऊँ सिद्ध स्वभाव।
भावों में समभाव हो, तजूँ विकारी भाव॥

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनन्दननाथ भगवान का अर्घ्य

अभिनन्दन वन्दन करूँ, क्रन्दन कर्म नशाय।
जग बन्धन को तोड़कर, सिद्धालय को पाय॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुमतिनाथ भगवान का अर्घ्य

मिथ्यावाद को दूर कर, स्याद्वाद प्रगटाय।
दुर्बुद्धि दुर्ध्यान तज, सुमतिनाथ शिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पद्मप्रभ भगवान का अर्घ्य

पद्मासन बैठे प्रभू, आतम पद्म खिलाय।
पद्म खिले निज ध्यान का, पद्म प्रभु सिर नाय॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

वीतराग निज ज्ञान में, झलके तीनों लोक।
तत्व प्रकाशक महामुनि, चरण सुपारस धोक॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभु भगवान का अर्घ्य

अखिलेश्वर हे महाव्रती, तीर्थ प्रवर्तक आप।
धवल वर्ण तन आत्मा, चन्द्र प्रभु निष्पाप॥

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पुष्पदन्त भगवान का अर्घ्य

भव भंजक भगवान हैं, पुष्पदंत शुभ नाम।
मगर चिह्न तन श्वेत है, शत शत करूँ प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ भगवान का अर्घ्य

धर्मामृत का दान दे, शीतल शिवपद पाय।
मम आतम शीतल करे, छोड़े विषय कषाय॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री श्रेयांसनाथ भगवान का अर्घ्य

जय जय श्रेयांशम तव गुण पासं, कर्म विनाशं भक्ति करम्।
पावन पद बन्दों जय जिन चन्दों, कृपा करिंदो शान्ति प्रदम्॥

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य भगवान का अर्घ्य

पाँचों कल्याणक महा, चम्पापुर में पाय।
बाल ब्रह्मचारी प्रथम, वासुपूज्य जिनराय॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ भगवान का अर्घ्य

बाहर भीतर स्वच्छता, विमल अमल गुणवन्त।
अर्घ चढ़ाकर पूजता, पाने पद अरहन्त॥

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नम: अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अनन्तनाथ भगवान का अर्घ्य

सुख अनन्त पाया प्रभु, कर कर कर्मन अन्त।
अर्घ चढ़ा वन्दन करूँ, अनन्तनाथ भगवन्त॥

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धर्मनाथ भगवान का अर्घ्य

ध्वनि सुनि ध्रुवधाम की, धैर्य धर्म प्रगटाय।
ध्याता बन निज ध्येय को, धर्मनाथ सम ध्याय॥

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवान का अर्घ्य

जय त्रिभुवन नायक आतम ज्ञायक, कर्म विनाशक शान्ति नमो।
जय शिवपुरवासी ज्ञान प्रकाशी, धर्म विकासी शान्ति नमों॥

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंथुनाथ भगवान का अर्घ्य

कर्म जहर निज आत्मा, मरण देय भटकाय।
भक्ति कुन्थुनाथ की, सर्व जहर विनशाय॥

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अरहनाथ भगवान का अर्घ्य

दर्पण में मुख रूप लख, भूला आत्म स्वरूप।
अरहनाथ सर्व दर्प हर, पाया चिन्मय रूप॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मल्लिनाथ भगवान का अर्घ्य

हे लेश्या तीता भव्या मीता, परम पुनीता मल्लि जिनेश।
जय आत्म विहारी बाल ब्रह्मचारी, आरती उतारी भक्ति विशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान का अर्घ्य

शत इन्द्रों ने भक्ति कर, नाशा भव भटकाव।
मुनिसुव्रत की अर्चना, देवे निज स्वभाव।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नमिनाथ भगवान का अर्घ्य

नमिनाथ नमता रहूँ, नम्र भाव मन धार।
अहंकार सब मेट कर, धारूँ शुद्ध विचार।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवान का अर्घ्य

पशु बन्धन को देखकर, धार लिया वैराग्य।
सर्वदर्शी नेमी प्रभु, नमन जगावे भाग्य।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ भगवान का अर्घ्य

क्षायिक नव लब्धि महा, योग निरोध कर पाय।
पार्श्व प्रभु की वन्दना, पाऊँ निज स्वभाव।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ्य

शासन नायक वीर जिन, अनेकान्त सरताज।
समवशरण सन्देश दे, पाया मुक्ति राज।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय नमः अनर्घपद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्वामी का अर्घ्य

श्रद्धा का जल कर में लेकर भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरुवर पावन दीप धूप वन्दन भाया।।
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की पूजा कर सुख पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्री मंशापूर्ण महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आदि जिनेश्वर जग हितकारी, अजित नाथ जित कर्म विकारी।
संभव भव का नाश किया है, अभिनन्दन जग जान लिया है।।
सुमतिनाथ सन्मार्ग प्रदाता, पद्म प्रभु जी जग विख्याता।
नाथ सुपारस जय हो तेरी, चन्द्रप्रभु काटो भव फेरी।।
पुष्पदन्त श्री जिनवर नामा, शीतल शीतलता ध्रुव धामा।
श्रेयनाथ गुण दया निधाना, वासुपूज्य पूजित अविरामा।।
विमलनाथ निर्मलता धारी, है अनन्त अक्षय सुखकारी।
धर्मनाथ जिन धर्म बढ़ावें, शान्तिनाथ मन शान्त करावें।।
कुन्थुनाथ जी काम विजेता, अरहनाथ त्रिपद के नेता।
मल्लिनाथ सब शल्य मिटावें, मुनिसुव्रत व्रत में तिष्ठावें।।
नमिनाथ को नमन हमारी, नेमिनाथ दुख संकटहारी।
पारसनाथ सदा ही ध्याऊँ, महावीर पद शीश नवाऊँ।।

दोहा

चौबीसों के चरण में, वन्दन बारम्बार।
"सौरभ सागर" नित नमें, भक्तिभाव उरधार।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूणार्घं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप्य- ॐ ह्रीं वृषभादि वीराय नमः।

त्रिकाल चौबीसी प्रत्येक अर्घ

त्रिकालिक प्रथम तीर्थंकर

धर्म प्रवर्तक <u>आदिनाथ</u> जी, चिन्मय मूरत प्रथम जिनेश।
तीर्थंकर <u>निर्वाण</u> भूत के, प्रारंभिक ज्ञायक अखिलेश।।
आने वाले <u>महापद्म</u> जी, धर्म ध्वजा फहरायेगें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, प्रथम तीर्थंकर ध्यायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ निर्वाण महापद्म त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक द्वितीय तीर्थंकर

कर्म विजेता अजितनाथ जी, गज चिन्हाकिंत द्वितीय जिनेश।
सागर से गंभीर भूत के, तीर्थंकर है अपर महेश।।
नर सुर सेवित भावी जिनवर, श्री सुरदेव सदा सुखकार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर जय जयकार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ, श्री सागर, श्री सुरदेव त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तृतीय तीर्थंकर

जग में संभव सब कुछ है जब, संभवनाथ कृपा बरसे।
महासाधु सा जीवन जीकर, ध्यान मग्न जीवन हरसे।।
आने वाले तीर्थंकर श्री, सुपार्श्वनाथ[1] कल्याण करें।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रय तीर्थंकर ध्यान धरें।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ, महासाधु, सुपार्श्वनाथ त्रिकालिक तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चतुर्थ तीर्थंकर

मन मर्कट सा मचल रहा हो, अभिनंदन का जाप करें।
विमलप्रभ सा निर्मल मन कर, जीवन के संताप हरें।।
तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभ सम, स्वयं प्रभा प्रगटाऊंगा।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर गुण गाऊंगा।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदन, विमलप्रभ, श्री स्वयं प्रभ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–तृतीय तीर्थंकर का सुरिप्रभ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक पंचम तीर्थंकर

सुमतिनाथ मति पाने को मन, सुमन सुमन ले नमन किया।
श्री श्रीधर[1] सम शुद्ध आत्म कर, सिद्धालय में गमन किया।।
सर्वात्मभूत जिन देव पांचवे, होने वाले तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूँ तीनों तीर्थंकर।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ, श्रीधर, सर्वात्मभूत तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक षष्टम तीर्थंकर

खिला कमल सा चिन्ह आपका, पद्मप्रभु पावन भगवान।
सुदत्तनाथ के समवशरण में, दिव्य ध्वनि खिरती अविराम।।
तीर्थंकर श्री देवपुत्र[2] जी, होवेंगें पुण्यार्थ नमूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक सदा नमूं।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु, सुदत्तनाथ, देवपुत्र तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सप्तम तीर्थंकर

स्वयं बोध स्वास्तिक से होता, नाथ सुपार्श्व का लांक्षन है।
कर्म रहित श्री अमलप्रभ[3] जी, सिद्धालय सुख हर क्षण हैं।।
कुल कीर्ति को बर्धित करने, वाले हैं कुलपुत्र[4] मुनि।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक त्रयों मुनि।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ, अमलप्रभ, कुलपुत्र नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:–पंचम तीर्थंकर सर्वदुध नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:–षष्टम तीर्थंकर जयदेव जी नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकर**:–सप्तम तीर्थंकर का सदल नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:–सप्तम तीर्थंकर का उदयदेव जी का भी उल्लेख है।
   भूतकालीन तीर्थंकर:–नवम तीर्थंकर का आडिट नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक अष्टम तीर्थंकर

चंद्रमणि सम चंद्रकांति मय, चंद्रप्रभु जिनराज महान।
उद्धर जिन उद्धार कराते, सिद्धालय में ज्योतिर्मान।।
उदंकनाथ भावी तीर्थंकर, चरण वंदना नित्य करूं।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर का ध्यान करूं।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभु, उद्धर जिन, उदंक देव तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक नवम् तीर्थंकर

भव भय भंजक पुष्पदंत प्रभु, भवोदधि के तारणहार।
भूतकाल के अंगिर जिनवर, पूजूं कर्मन नाशन हार।।
प्रोष्ठिल[1] है भावी तीर्थंकर, पायेंगे आगे निर्वाण।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर पूजूँ धर ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त, अंगिर, प्रोष्ठिल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक दशम तीर्थंकर

सुखदायक कल्याणक पाया, शीतल स्वामी तप करके।
भूतकाल के सन्मति देवा[2], सद्गति देवे भव हरके।।
जयकीर्ति जिनधर्म बढ़ाने, होंगे दशवें तीर्थंकर।
भूत भविष्यत वर्तमान के, पूजूं कर्म रहित जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ, सन्मति देव, जयकीर्ति तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर**:–नवम तीर्थंकर का प्रश्नकीर्ति जी का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकर**:–दशम तीर्थंकर का अग्निनाथ नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक ग्यारहवें तीर्थंकर

घाति कर्म विनाशक जिनवर, नाम श्रेयांश है मंगलकार।
सिंधु[1] जिनवर बंदू अघहर, भव ध्वंसि गुण अपरंपार।।
पूर्ण बुद्ध हो मुनिसुव्रत[2] जी, नामधारी भावी जिनराज।
भूत भविष्यत वर्तमान जिन, पूजू निजानंद ध्रुवराज।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांश नाथ, सिंधुनाथ, मुनिसुव्रत नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बारहवें तीर्थंकर

वासुपूज्य ब्रह्मचारी जिनवर, सिद्धालय में रहे विराज।
कुसुमांजलि तीर्थंकर पूजूँ, भूतकाल के हे जिनराज।।
निष्कामी अर[3] अमल जिनेश्वर, नित्य सुखाश्रित बसते है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थ प्रवर्तक कहते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य, कुसुमंजलि, अरनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेरहवें तीर्थंकर

विमल भाव ले विमलनाथ के, विमल गुणों का गान करें।
शिवगण नायक आतम ज्ञायक, जिनवर का सम्मान करें।।
कर्म रहित निष्पाप नाम के, भावी तीर्थंकर जय कार।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म शिरोमणि जग हितकार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ, शिवगणनाथ, निष्पाप नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का सयंम नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–ग्यारहवें तीर्थंकर का पूर्णबुद्ध नाम का भी उल्लेख है।
3. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–बारहवें तीर्थंकर का अरअहम नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक चौदहवें तीर्थंकर

जय भगवंतं नाथ अनंतम, पार किये चौदह गुणथान।
राग द्वेष मद मोह विनाशी, तीर्थंकर उत्साह[1] महान।।
निष्कषाय[2] भावी तीर्थंकर, स्वयं स्वयंभू कहलाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, त्रैकालिक तीर्थंकर ध्याय।।

ॐ ह्रीं श्री अनंतनाथ, उत्साह नाथ, निष्कषाय नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक पंद्रहवे तीर्थंकर

वस्तु का स्वभाव धर्म है, धर्मनाथ की वाणी है।
ज्ञानेश्वर[3] तीर्थंकर का शुभ, नाम आत्म कल्याणी है।।
विपुल[4] तपस्या विमल भाव से, भावी तीर्थंकर करते।
भूत भविष्यत वर्तमान के, हितकारी जिनवर भजते।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ, ज्ञानेश्वर नाथ, विपुलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक सोलहवें तीर्थंकर

समरस भावों से समता रख, शान्तिनाथ जिनवर ध्याते।
परमेश्वर[5] के परम पदों में, प्रतिदिन नमनान्जलि लाते।।
निर्मल नाथ है भावी भगवन, निर्मलता दे जायेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ चढ़ायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ, परमेश्वर नाथ, निर्मलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का उत्सव नाम का भी उल्लेख है।
2. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–चौदहवें तीर्थंकर का स्वयंभू नाम का भी उल्लेख है।
3. **भूतकालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का यशोधरा नाम का भी उल्लेख है।
4. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–पन्द्रहवें तीर्थंकर का विमलप्रभ नाम का भी उल्लेख है।
5. **भविष्य कालीन तीर्थंकरः**–सोलहवें तीर्थंकर का बदल नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक सत्रहवें तीर्थंकर

जग की क्षण भंगुरता जाना, कुंथुनाथ जग छोड़ गए।
विमलेश्वर[1] वैराग्य धारकर, जगती से मुख मोड़ गये।।
चित्रगुप्त न जीवन लिखते, ये भावी तीर्थंकर है।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवर अर्घ समर्पण है।।

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ, विमलेश्वर, चित्रगुप्त नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक अठारहवें तीर्थंकर

मछली सा चंचल यौवन है, अरहनाथ जी जान गए।
नाथ यशोधर तीर्थंकर है, जीवन को पहचान गए।।
समाधि गुप्त भावी तीर्थंकर, सन्यासी महिमा गाए।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म प्रवर्तक गुण गाये।।

ॐ ह्रीं श्री अरनाथ, वर्धमान नाथ, समाधीगुप्त तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक उन्नीसवे तीर्थंकर

कलश चिन्हधारी प्रभुवर जी, मल्लिनाथ सब क्लेश हरें।
कृष्णमती के समवशरण में, भव्य जीव प्रवेश करें।।
स्वयं स्वयंभू नाथ हितैषी, भावी श्री भगवान बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को सदा नमै।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ, कृष्णमती, स्वयंभूनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भूतकालीन तीर्थंकरः**-सत्रहवें तीर्थंकर का विनयेश्वर नाम का भी उल्लेख है।

त्रिकालिक बीसवे तीर्थंकर

मुनियों का व्रत मुनीसुव्रत ले, मुनियो के मुनि नाथ बने।
ज्ञानमती केवल ज्ञानी जिन, समवशरण सुरनाथ नमें।।
अनिवर्तक शुभ धर्म प्रवर्तक, भावी तीर्थंकर ध्याये।
भूत भविष्यत वर्तमान के, समवशरण धारी ध्याये।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रत नाथ, ज्ञानमती, अनिवर्तक नाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक इक्कीसवे तीर्थंकर

विश्व विलोकी अरिकुल नाशक, नमिनाथ जय भगवंता।
शुद्धमति तीर्थंकर हितकर, नमूं नमूं जय अरिहंता।।
वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, गुण धारी जयनाथ बने।
भूत भविष्यत वर्तमान के, धर्म धुरंधर चरण नमैं।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ, शुद्धमती, जयनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक बाईसवें तीर्थंकर

बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकर, नेमिनाथ गिरनार चढ़े।
भूतकाल के भद्रनाथ जी, शुद्ध भाव धर मोक्ष चढ़े।।
विमलनाथ भावी तीर्थंकर, विमल भाव से पूजेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ, भद्रनाथ, विमलनाथ तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक तेईसवे तीर्थंकर

पारस ने उपसर्ग सहा था, केवल ज्ञान मिला उपहार।
अतिक्रांत[1] जी है अतीत के, दीन दयालु धर्माधार।।
देवपाल देवाधिदेव जी, तीर्थंकर है दीनदयाल।
भूत भविष्यत वर्तमान को, अर्घ चढ़ाऊं भर भर थाल।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ, अतिक्रांत नाथ, देवपाल तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

त्रिकालिक चौबीसवें तीर्थंकर

वर्तमान के वर्धमान जिन, शासन नायक तारणहार।
शांतिनाथ[2] जी देव हमारे, भूतकाल के करुणा धार।।
अनंतवीर्य जी तीर्थंकर पर, भावी काल में होवेंगे।
भूत भविष्यत वर्तमान के, तीर्थंकर को पूजेंगे।।

ॐ ह्रीं श्री वर्धमान, शान्तियुक्त नाथ, अनंतवीर्य तीर्थंकराय नमः अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. **भविष्य कालीन तीर्थंकर:**–तेईसवें तीर्थंकर का अनंतवीर नाम का भी उल्लेख है।
2. **भूतकालीन तीर्थंकर:**–चौबीसवें तीर्थंकर का शांतास् नाम का भी उल्लेख है।

अर्घ्यावली
समुच्चय अर्घ

अष्ट द्रव्य का अर्घ थाल लें, श्रद्धा से अर्पित करता।
है अनर्घ पद पावन तेरा, पाने मन उलसित होता॥
परमेष्ठी अरुँ माँ जिनवाणी, विद्यमान बीसों मुनिराज।
तीस चौबीसी सिद्ध भूमि नम, पूजूँ अकृत्रिम जिनराज॥

ॐ ह्रीं श्री पंचपरमेष्ठी समूह द्वादशांगमय जिनवाणी समूह-विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह-तीर्थंकर मुनिराज की अढ़ाई द्वीप सम्बन्धी मोक्ष भूमि समूह तीस चौबीसी तीर्थंकर अकृत्रिम जिनबिम्ब समूह अनर्घ्य पद प्राप्ताय **अर्घम्** निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीसी अर्घ्य

ऋजु भावों का शुभ जल लेकर, समता का चन्दन लाया।
ध्यान अवस्था के अक्षत ले, भक्ति पुष्प मन खिलवाया॥
चाहत की नैवेद्य चढ़ाकर, श्रद्धा दीप जलाऊँगा।
अष्ट मदों की धूप समर्पित, निराकार फल पाऊँगा॥
अष्ट द्रव्य का अर्घ बनाकर, चरणों में अर्पित करता।
चौबीसी की पूजा करके, अन्तर मन हर्षित होता॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि-महावीरपर्यन्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली

(चौबीस तीर्थंकर की अर्घावली पृष्ठ नं. 61 पर देखें)

चौबीस निर्वाण भूमि अर्घ्य

तीरथ है सम्मेद शिखर जी, बीस पधारे श्री निर्वाण।
आदिनाथ कैलाशगिरी से, वासुपूज्य चम्पापुर धाम॥
नेमिनाथ गिरनार शिखर से, निराकार पद पाया है।
पावापुर महावीर प्रभु ने, आठों कर्म नशाया है॥
तीर्थंकर चौबीसो जिनवर, परम धाम को पाये हैं।
अष्ट द्रव्य मय अर्घ्य चढ़ाकर श्रद्धा शीश झुकाये हैं॥

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति-तीर्थंकर-निर्वाणस्थली श्रीसम्मेदशिखर-गिरनार-कैलाशगिरि चम्पापुर-पावापुर-निर्वाणक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

निर्वाण सागर महासाधु जी, विमल प्रभु गुण गान करें।
धर्म प्रवर्तक श्रीधर जिनवर, नाथ सुदत्त सुध्यान करें॥
अमल प्रभु जी उद्धर अंगिर, सन्मति का जयघोष करें।
सिंधु कुसमाँजलि शिवगण मुनि, तीर्थंकर उत्साह भरे॥
ज्ञानेश्वर परमेश्वर जिनवर, विमलेश्वर यशोधर शुभ नाम।
कृष्ण ज्ञान अरु शुद्धमति जिन, भद्रअति शान्ति सुख धाम॥
सिद्धालय में अमल अचल जिन, शाश्वत आनंद पाये है।
भूतकाल के चौबीस जिनवर, पूरण अर्घ चढ़ायें है॥

ॐ ह्रीं श्री निर्वाण आदि शांति पर्यन्त भूतकाल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

भविष्य काल चौबीस तीर्थंकर अर्घ

महापदम् सुरदेव सुपारस, स्वयं प्रभु सर्वात्म जिनेश।
देव पुत्र कुल उदंक नाथ जिन, प्रोष्ठिल जयकीर्ति जी विशेष॥
मुनिसुव्रत अरनाथ नमूँ मैं, पूजूं श्री निष्पाप कषाय।
ध्याऊ नाथ विपुल निर्मल जिन, चित्र समाधि गुप्त कहाय॥
नाथ स्वयंभू अनिवर्तक जय, विमल नाथ जयपाल जपूँ।
अनंतवीर्य जी अंतिम जिनवर, भावी तीर्थंकर पुजूँ॥
तीर्थंकर बन कर्म नशाये, जगति का कल्याण करें।
अर्घ चढ़ाऊ भावी जिनवर, सौरभ पा उत्थान करें॥

ॐ ह्रीं श्री महापद्मआदि अनंतवीर्य पर्यंत भविष्य काल संबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घम् निर्वपामिति स्वाहा।

वर्तमान चौबीस तीर्थंकर अर्घ

ऋषभ अजित संभव अभिनन्दन, सुमतिनाथ स्वामी गुणखान।
पद्म सुपारस चन्दा प्रभु जी, पुष्पदन्त जिन कर लूँ ध्यान॥

हे शीतल प्रभु शीतल करदों, श्रेयनाथ जिन हृदय विशाल।
वासुपूज्य पद बाल ब्रह्म हैं, विमल अनन्त धरम जयमाल॥
शान्ति कुन्थु अर मल्लि जिनेश्वर, मुनिसुव्रत व्रत पाऊँगा।
नमिनाथ नम नेमि शरण पा, पारस वीर को ध्याऊँगा॥
तीर्थंकर है धर्म शिरोमणि, कर्म नाश भव पार करो।
भक्ति भाव से अर्घ चढ़ाऊ, मम विनती स्वीकार करो॥

ॐ ह्रीं ऋषभादि महावीरपर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्धम् निर्वपामिति स्वाहा।

माँ जिनवाणी अर्घ

दिव्य ध्वनि का निर्मल जल ले, तत्वों का चन्दन लाया।
अंग पूर्व का अक्षत लेकर, धर्म पुष्प मन खिलवाया॥
नय निक्षेप का नेवज लेकर, गुणस्थान का दीप जला।
अष्ट कर्म का धूम उड़ाया, निराकार फल मोक्ष मिला॥
चारों अनुयोगों से पूरित, जिन आगम को जान रहे।
अष्ट द्रव्य मय अर्ध्य चढ़ाकर, जिनवाणी सम्मान करें॥

ॐ ह्रीं श्री जिनसर्वांगोद्‌भव-गणधर-ग्रहीत-द्वादशांग-मय-श्रुत-देवतायै: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन कम नौ करोड़ मुनिराजों का अर्घ्य

तीन घटाकर नौ करोड़ की, संख्या मुनिवर की जानो।
धरती पर जीवन्त जिनेश्वर, उन पर श्रद्धा हित मानो॥
तपसी जल से भिन्न कमल वत्, जीवन अपना जीते हैं।
ढाई द्वीप के मुनिराज को, अर्घ समर्पित करते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं अढाईद्वीप-मध्ये-तीन-कम-नौ-करोड़-मुनिवरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ-गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी

अरमानों की थाली जोयी, नयनों में जल भर लाया।
सुनहिल भावों की केशर ले, शब्द पुष्प तन्दुल लाया।।
तन नैवेद्य बना मन दीपक, मद यौवन की धूप बना।
तव पद में अर्पित सिर फल, पूजन का यह अर्घ बना।

दोहा

तन मन धन अर्पण किया, रहा न कुछ भी शेष।
अष्ट द्रव्य से पूज कर, पाऊँ जिनका भेष।।

ॐ ह्रूं श्री 108 गणाचार्य-पुष्पदंत-सागर-जी-महाराज-अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपमीति स्वाहा।

अर्घ-आचार्य श्री सौरभ सागर जी

जल से घुलते कर्म हमारे, चन्दन से मिलती शीतलता।
पुंज चढ़े जब गुरु चरणों, में पुष्प सुगन्धित है देता।।
नैवेद्य चढ़ाकर क्षुधा नशाऊँ, निज ज्ञान का दीप जलाऊँ मैं।
धूप चढ़ाकर कर्म जलाऊँ, फल से मोक्ष फल पाऊँ मैं।।
आठों द्रव्यों को एक मिलाकर, गुरुवर के गुण गाऊँ मैं।
भव भव के सब पाप नशे, अरिहंत अवस्था पाऊँ मैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी आचार्यश्री सौरभ सागर जी गुरुदेव चरणेभ्यो अन्घर्य पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय महार्घ्य

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हन्त पूजूँ सिद्ध पूजूँ चावसों।
आचार्य श्री उवझाय पूजूँ साधु पूजूँ भावसों।।1।।
अर्हन्त भाषित बैन पूजूँ द्वादशांग रचे गणी।
पूजूँ दिगम्बर-गुरुचरण शिव हेतु सब आशा हनी।।2।।

सर्वज्ञ भाषित धर्म-दशविधि दया-मय पूजूँ सदा।
जजुँ भावना षोडश-रत्नत्रय जा बिना शिव नहिं कदा।।3।।
त्रैलोक्य के कृत्रिम-अकृत्रिम चैत्य-चैत्यालय जजूँ।
पन मेरु नंदीश्वर, जिनालय खचर, सुर, पूजित भजूँ।।4।।
कैलाश श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजूँ सदा।
चम्पापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा।।5।।
चौबीस श्री जिनराज पूजूँ बीस क्षेत्र विदेह के।
नामावली इक सहस वसु जपि होय पति शिवगेह के।।6।।

दोहा

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।7।।

ॐ ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच परमेष्ठिभ्यो नमः, प्रथमानुयोग करणानुयोग चरणानुयोग द्रव्यनुयोगेभ्यो नमः, दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो नमः, उत्तमक्षमादि दशलाक्षणिकधर्मेभ्यो नमः, सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः, जल के विषैं थल के विषैं आकाश के विषैं गुफा के विषैं पहाड़ के विषैं नगर नगरी विषैं ऊर्ध्वलोक मध्यलोक पाताललोक विषैं विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः, पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः, नन्दीश्वरद्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः, पंचमेरुसंबंधी अस्सी जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो नमः, सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः, जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कार जी श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागाँव पुष्पगिरी, सौरभांचल पार्श्वनाथ, मंशापूर्ण महावीर आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः, ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति तीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षत्रे आर्यखंडे............नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे.......... मासे............शुभे............पक्षे शुभ............तिथौ..... ....वासरे मुनि आर्यिकानां श्रावक श्राविकाणां सकलकर्मक्षयार्थं (जलधारा) अनर्घ्यपद प्राप्तये महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति पाठ (हिन्दी)

शांतिनाथ! मुख शशि उनहारी, शील गुण व्रत, संयमधारी।
लखन एक सौ आठ विराजैं, निरखत नयन कमल दल लाजें॥1॥

पंचम चक्रवर्ती पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमौं शांतिहित शांतिविधायक॥2॥

दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुंदुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी॥3॥

शांति जिनेश शांति सुखदाई, जगत् पूज्य पूजौं सिरनाई।
परम शांति दीजे हम सबको, पढ़ें तिन्हें पुनि चार संघ को॥4॥

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके, इंद्रादिदेव अरुँ पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शांतिनाथ वर वंश जगत् प्रदीप, मेरे लिए करहु शांति सदा अनूप॥5॥

संपूजकों को प्रतिपालकों को, यतीन को औ यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजे सुखी हे जिन! शांति को दे॥6॥

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो धर्मधारी नरेशा।
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे व्याधियों का अंदेशा।

होवे चोरी न जारी, सुसमय वरषे हो न दुष्काल मारी।
सारे ही देश धारें, जिनवर वृष को जो सदा सौख्यकारी॥7॥

घाति कर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज।
शांति करें सब जगत् में, वृषभादिक जिनराज॥8॥

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगती का।
सद्वृत्तौं का, सुजस कहके, दोष ढाँकू सभी का॥9॥

बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ।
तौ लौ सेऊँ, चरण जिन के मोक्ष जौ लौ न पाऊँ॥10॥

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तबलौं लीन रहे प्रभु, जबलौं पाया न मुक्ति पद मैंने॥11॥

अक्षर पद मात्रा से, दूषित जो कुछ कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणा करि पुनि छुड़ाहु भवदुःख से॥12॥

हे जगबंधु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी॥13॥

विसर्जन पाठ (हिन्दी)

बिन जाने या जान के, रही टूट जो कोय।
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय॥
पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन भी नहीं, क्षमा करो भगवान्॥
मंत्र हीन धन हीन हूँ, क्रिया हीन जिनदेव।
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव॥
श्रद्धा से आराध्य पद, पूजे भक्ति प्रमाण।
पूजा विसर्जन मैं करूँ, सदा करो कल्याण॥
आए जो जो देवगण, पूजे भक्ति प्रमाण।
ते अब जावहु कृपा कर, अपने अपने थान॥

इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि

(इसके पश्चात् खड़े होकर आरती करें)

आसिका लेने का पद

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजे शीश चढ़ाए।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाए॥

(स्तुति या भजन आदि बोलते हुए वेदी सहित प्रतिमाजी की तीन प्रदक्षिणा देकर धोक देनी चाहिए)

॥इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

श्री ऋषिमण्डल स्तोत्र

हृदय कमल में अर्हत पद का स्थापन जो है करना,
कार्मन काठ जलावन कारण अग्नि ज्वाला है बनना।
निर्मल है वह निर्मल करता अर्हत पद का दाता,
बारम्बार नमूँ मैं उनको, पाऊँ अक्षय साता।
हृदय कमल की आठ पँखुड़ी उनमें क्रम से रखना,
अर्हंत, सिद्ध आचार्य उपाध्याय, साधु सर्व विचरना।
सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान, सम्यक्चारित्र उचरना,
ऐसे आठों पूज्यनीय को, चित में फिर फिर धरना।
ऊँ बीजाक्षर प्रथम उचारै, नमः पल्लव करिये,
ध्यान धरै इन आठों पद का, आनन्द उर में भरिये।
अरहंत पद का ध्यान किये से, सिर की रक्षा होवे,
सिद्ध समूह जपन करने से, मस्तक रक्षित होवे।
सूरि सुगुण मन में ध्याने से, नेत्र सुरक्षित होवे,
चौथे पद के गुण चिंतन से, घ्राण सुरक्षित होवे।
मुख की रक्षा करे साधुगण, दर्शन गर्दन रक्षै,
नाभि रक्षे सप्तम पद, जो सम्यग्ज्ञान सुदक्षै।
सम्यक्चारित्र सर्व अंग को, पाद पर्यन्त सुरक्षे,
ऐसे सकलीकरण करन से, होवे पूजक अक्षै।
ऋषि मण्डल यह पूजन भारी, इसको विधि से करिये,
विघ्नविनाश करें सुखदाता, श्री ब्रह्मचारी उचरियें।

सब द्वीपों के मध्य जम्बूद्वीप बसे,
उसकी है आठ दिशा पूरब आदि लसे।
अर्हंतादि पद आठ उनमें राजत हैं,
करिये उनका ध्यान पाप पलावत है।
मध्य सुदर्शन मेरु कंचनमय सोहे,
उपरि सिंहासन माहि अक्षर ह्रीं मोहे।
उनमें चौबीस जिनेश उनके गुण भारी,

अक्षय निर्मल शांत ताप जाड्य हारी।
निरहंकार निरीह सार, सार गुण सोहे,
सौम्य शुद्ध शुभ रूप तीन लोक मोहे।
तीन लोक के स्वामी यातें राजस है,
कर्म घातिया चूरे यातैं तामस है।
सदगुण से भरपूर सात्विक सोहत है,
ज्ञान तेज से सूर्य भ्रमतम खोवत है।
रूपगंध रस वर्ण इनसे दूर रहे,
तो भी है साकार समरस पूर रहे।
पर को दिया त्याग निज रस में पागे,
परमौदायिक देह आतम गुण जागे।
चूरे है सब कर्म तन को है छोड़ा,
निज रस पी संतुष्ट पर से मुँह मोड़ा।
करी कालिमा दूर आकांक्षा पूरी,
संशय रहा न लेश सब आशा पूरी।
ईश्वर ब्रह्मा बुद्ध ज्योति रूप खड़े,
शाश्वत सिद्ध स्वरूप सब में देव बड़े।
लोकालोक प्रकाश करते नाहि थके,
ऐसे श्री ह्रीं देव मेरे मन में धरे।
एक वर्ण दो वर्ण तीन वर्ण धारी,
चार पाँच हैं वर्ण सब के अधिकारी।
ऋषभादिक चौबीस तीर्थंकर सब ही,
ध्याओ उनको नित्य जैसे निम्न कही।
अर्ध चंद्र आकार ह्रीं का नाद कहा,
उसका वर्ण है श्वेत जैसे चन्द्र महा।
उसमें ध्याओ देव श्वेत वर्ण वाले,
चन्द्रप्रभु पुष्पदंत सब के रखवाले।
श्याम वर्ण की देह बिंदी की कीजै,
उसमें लिखिये नेमि मुनिसुव्रत कीजै।
मस्तक ऊपर भाग लाल वर्ण सोहे,

पद्मप्रभु वासुपूज्य अरुँण वर्ण मोहे।
शिर संलीन ईकार नीलम वर्ण कहा,
सुपार्श्व पार्श्व महाराज थापूँ पूज्य महा।
सोलह श्रीजिन देव कंचनमय देहा,
वे-ह-र मध्य लिखेय होवे सुखगेहा।
रागद्वेष मद मोह जीते इन सबने,
मायालीन में ये राजत हैं सब रे।
इनका सदा ध्यान किये जो ज्वाला निकले,
उनमें वेष्ठित देह मेरी जो उजले
तब नाही विषधर जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
श्री ऋषिमण्डल मध्य ह्रीं का परिकर है,
उसमें रक्षित देह मेरी सुखकर है।
तब नाहिं नागिन जाति मेरा निष्ट करे,
सेवक होकर वेग मेरे पाँव परे।
सर्वऋद्धि के ईश अर्हत गणधर हैं,
उनके तेज से लोग वेग सब ही व्याप्त है।
उनका ध्यान किये परम सौख्य होगा,
विलय जायेंगे दु:ख मेरे अति वेगा।
पाताल, लौकिक देव, मध्य लोकवासी,
निर्जर ऊरघ लोक सब विमानवासी।
तुम सब ही जिन भक्त साधर्मी भाई,
करना मेरी सहाय सुनिये मनलाई।
मुनिवर है जगमाहिं अवधि श्रुतधारी,
विक्रिया चारण आदि सब ही ऋद्धिधारी।
मुझ पर कीजै कृपा तुम रक्षक सबके,
अतएव पूजूँ पायें विघ्न हरो जनके।

श्री मंशापूर्ण महावीर स्तुति

हे वीर प्रभो महावीर प्रभो, तेरे चरणों में आया हूँ।
सब पाप ताप संताप हरो, मैं अर्चन कर हर्षाया हूँ॥
आओ आओ प्रभु एक बार, मेरे मन का प्रक्षाल करों।
हे महाश्रमण हे वर्धमान, तुम सन्मति दे जंजाल हरों॥
प्रभु मंशापूरण करते हो, प्रभु संशय तिमिर भी हरते हों।
मैं मन से पूजा तेरी करूँ, सुख सिन्धु से भी भरते हों॥1॥
श्रद्धा का जल कर में लेकर, भक्ति का चन्दन लाया।
अक्षत कुसुम चरूवर पावन, दीप धूप वन्दन भाया॥
सिद्ध शिला फल चाह लिये प्रभु, आठों द्रव्य चढ़ाऊँगा।
श्री मंशापूरण महावीर की, पूजा कर सुख पाऊँगा॥2॥
महामना हे महामुनि हे, महायोगी महाज्ञानी हो।
महाशक्ति हे महाज्योति हे, महाप्रभु महादानी हो॥
महाव्रतों को महाभाव से, महावीर ने धार लिया।
मंशापूरण महावीर बन, मानव का उद्धार किया॥3॥
भावों की शुभ निर्मलता ही, भव बन्धन को नित काटें।
निज स्वभाव में रम जा चेतन, खोल राग की सब गाठें॥
भाव-साधना-भाव-समाधी, भाव स्वभाव मे लीन रहें।
द्रव्य भाव द्वय अर्घ्य समर्पित, श्रद्धालय में लीन रहें॥4॥
अन्तिम गर्भ हो चरमोत्तम तन, महावीर-सा बन जाऊँ।
महाअर्घ चरणाम्बुज देकर, वज्र कर्म सब विनशाऊँ॥
तीर्थंकर का गर्भाराधन, गर्भ दोष का नाश करे।
त्रय ज्ञानी समकित तीर्थंकर, धर्मात्मक उल्लास भरे॥5॥
जन्म काल का अतिशय सुखकर, तीर्थंकर ही पाते हैं।
कल्याणक शुभ जन्म मनाकर, नर देवा हर्षाते हैं॥
जन्म मरण की भ्रमण श्रृंखला, तब पूजा से घट जाये।
अर्घ समर्पित तव चरणों में, मोह तिमिर सब छट जाये॥6॥
वर्धमान अतिवीर वीर जिन, महावीर शुभ नाम कहो।
सद्बुद्धि सन्मार्ग प्रदाता, सन्मति का गुणगान अहो॥
राग-द्वेष मद लोभ मोह सब, नामोच्चारण दूर करें।
अर्घ समर्पित मंशापूरण, धर्मभाव भरपूर भरे॥7॥

दीर्घ साधना कर्म निर्जरा, धर्म ध्यान से नित साधें।
तन मन की इच्छा ज्वाला को, शुक्ल ध्यान जल से नाशें॥
महावीर की वीतरागता, निर्मल-निच्छल-मनहारी।
पूर्णअर्घ चरणों मे अर्पित, वर्धमान दीक्षाधारी॥8॥
केवलज्ञानी अतिशय धारी, चार घातियाँ नाश किया।
प्रातिहार्य आठों सज्जित है, समवशरण प्रवास किया॥
विपुलाचल वैभार गिरी या, पुण्यवान जग जीव जहाँ।
दर्शन पूजन व्रत उपदेशा, पाकर तिरते जीव यहाँ॥9॥

दोहा— अल्पज्ञान लब्ध्यक्षरा, पूरण केवल ज्ञान।
महावीर की देशना, करें आत्म कल्याण॥10॥

भू भीतर देवों द्वारा ही, पूजा सेवा नित होती।
वर्षों तक ना पुण्योदय था, दर्शन फिर कैसे होती॥
सात नवम्बर भू से प्रगटे, मंशापूरण श्री भगवान।
अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति गाऊँ, वर्धमान महावीर महान॥11॥
भक्ति में तन्मय हो करके, चिन्मय मुरत पाया है।
सिद्ध निरामय निर्मल निश्चल, अविनाशी सुख पाया है॥
हो विरक्त जग उलझन से प्रभु, तेरे दर पर आऊँगा।
आत्म ओज का उद्‌भव होवे, महावीर गुण गाऊँगा॥12॥
सुख राशि गुणदाता जिनवर, दया सिन्धू महावीर प्रभो।
विघ्न हरण हे मंशापूरण, वर्धमान अतिवीर विभो॥
परमेश्वर हो, प्रतिपालक हो, जिन शासन के नायक हो॥
महा-अर्घ्य चरणों मे अर्पित, सौरभ सागर ज्ञायक हो॥13॥

दोहा

महावीर जिनराज का, अद्‌भुत है दरबार।
भक्ति से पूजा करूँ, नमन करूँ शतबार॥14॥

धत्ता— जय जय महावीरा भवदधि तीरा, गुण गंभीरा अतिवीरा।
मम धर्म बढ़ावे जिनपद पावें, सौरभ सागर नत धीरा॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीमंशापूर्णमहावीरजिनेन्द्र पंचकल्याणक संयुक्त शिवपद-कर्त्ता-भव-जल-निधी सर्वविघ्नव्याधिहर्ता तव भक्ति प्रसादात् सर्व जीव कल्याणमस्तु दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु धन-धान्य समृद्धिरस्तु आरोग्यमस्तु सर्व जीव रोग शोक पीड़ा विनाशनं भवतु सम्यग्दर्शन ज्ञान-चारित्र-वृद्धिरस्तु सर्व-ऋिद्धि-सिद्धि-भवतु रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की पूजा

स्थापना

सौरभ सागर गुरु को, नमन हो बारम्बार।
श्रद्धा पुष्प चढ़ा रहे, करना तुम उद्धार।।
हृदय कमल पर आ तिष्ठो, सौरभ सागर महाराज।
जिह्वा गुण गाती रहे, हो मुनिवर सरताज।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज अत्र अवतर-अवतर संवौष्ट आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल

रगड़ रगड़ कर ये तन धोया, मन का मैल ना धो पाए।
इसीलिए तो गुरुवर क्षीरोदधि, से जल लेकर आए।।
निर्मल जल अर्पित करते हैं, जन्म जरामृत नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन

तरह तरह के लेप किए पर, तन संताप ना दूर हुआ।
जितना इसका शमन किया यह, उतना ही फिर और बढ़ा।।
मलयागिर चन्दन अर्पित तुमको, भव संताप को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में भवताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत

संसार दुःखों से भरा हुआ, नहीं मिलता मुझे किनारा है।
मोह माया से जकड़ा जीवन, पर ना कोई सहारा है।।

उज्जवल अक्षत अर्पित तुमको, इनको तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अक्षय पद प्राप्ताये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प

काम वेग से घिरे हुए हैं, कैसे बन्धन तोड़े हम।
तरह तरह के इत्र लगाए, इन्द्रीय दास बने हैं हम॥
कोमल पुष्प समर्पित तुमको, काम बाण को नष्ट करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य

नाना मिष्ट पकवान डकारे, फिर भी क्षुधा ना शान्त हुई।
जिव्हा के वश होकर मैंने, भक्ष अभक्ष की सुधि खोई॥
सरस नैवेद्य अर्पित तुमको, क्षुधा रोग को ध्वस्त करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में क्षुधा रोग विनाशनाय-नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप

अज्ञान तिमिर ने हमको घेरा, कैसे मंजिल पाएंगे।
तेरे ज्ञान की ज्योति पाकर, सहज पार हो जाएंगे॥
ज्ञान से ज्ञान की ज्योति जलती, दीपक तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप

अष्ट कर्म की दलदल में हम, हरदम फंसते जाते हैं।
पाप कर्म हम करते रहते, फल से नहीं घबराते हैं॥

धूप समर्पित तव चरणों में, अष्टकर्म का दहन करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल

लौंग बादाम और किशमिश लेकर, तेरे द्वारे आए हैं।
मोक्ष के फल का स्वाद बता दो, इच्छा मन में लाए हैं॥
फल अर्पित है चरण तुम्हारे, मुक्ति रमा का वरण करूँ।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में मोक्ष फल प्राप्ताये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प नैवेद्य, दीप धूप फल ले आए।
तब चरणों में अर्घ चढ़ा के, अष्टम वसुधा पा जाए॥
हम अर्घ समर्पित करते हैं, गुरुवर तुम स्वीकार करो।
मेरे सौरभ सागर गुरुवर, मम कष्टों को दूर करो॥

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ-पद-प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **भव भव से भटके फिरे, कोई ना तारनहार।**
सौरभ सागर गुरु मेरे, तुम ही करो उद्धार॥

जयमाला

लय (दे दी हमें आजादी....)

सौरभ सागर जी देव, गुरुदेव हमारे।
करते हैं भव से पार, गुरुदेव हमारे॥
माँ चन्द्रप्रभा कोख में, जब आप थे आए।
शुभ स्वप्न देख माता भी, फूली ना समाए॥

गज, सर्प, आग, सूर्य भी, देख लिया था।
अद्वितीय पुत्र जन्मेगा, ये जान लिया था॥1॥

जसपुर में गुरुदेव, तुमने, जन्म लिया था।
जसपुर की माटी को भी, तूने धन्य किया था॥
गुरू पुष्पदंत संघ, जसपुर में पधारे।
बालक सुरेन्द्र पुष्प संग, चल दिया प्यारे॥2॥

तपअग्नि में बारह वर्ष, गुरूदेव तपाया।
मैं भी बनूँ तब सम, गुरु ये मन में है भाया॥
आचार्य गुरुदेव ने, सौरभ बना दिया।
मुनिबाने से गुरुदेव ने, तुमको सजा दिया॥3॥

बाली उमर से सौरभ जी, अमृत पिला रहे।
आहत भी राहत पाके, आशीष पा रहे॥
संस्कार अलख देव, जन जन में जगाए।
संस्कार प्रणेता तभी, गुरुदेव कहलाए॥4॥

सृजन किया गुरुदेव ने, रचना कई लिखी।
सिद्धान्त शतक एक है, नायाब नव कृति॥
जिसने भी गुरुदेव का, साहित्य पढ़ा है।
जैनत्व बोध करके, उसका पाप कटा है॥5॥

बच्चों व शिक्षकों को, चमड़ा मुक्त किया है।
सौरभाँचल तीर्थ का, उपहार दिया है॥
हिसार की नसिया का, भी उद्धार है किया।
मनहर पारस क्षेत्र नाम, उसको दे दिया॥6॥

भू गर्भ में दबे थे, आदि पार्श्व अर वीरा।
अपने ज्ञान योग से, तुम जान लिया था॥
ज्ञान योगी देव गुरूदेव कहाए।
गुरूदेव के जयकार से गगन गुंजाए॥7॥

झज्जर के ग्राम झाडली में वीर थे प्रकटे।
ना देगे वीर मूर्त, ग्रामवासी अड़ गए।।
भक्ति की शक्ति से, महावीर बुलाए।
मंशा पूर्ण वीर, महावीर कहलाए।।8।।

पुष्पगिरी तीर्थ अप्रैल दश महा।
मेला लगा दृश्य अनुपम रहा महा।।
चारों दिशाएं गुंज उठी नमस्कार से।
आचार्य पद प्रतिष्ठा हुई जयजयकार से।।9।।

हम भी तो तेरे दर पे, अरदास लाए हैं।
दर्शन तिहारे मिलते रहे, प्यास लाए हैं।।
जीवन में मेरे 'आशा' की, तुम ज्योत जगा दो।
सुना है तेरा नाम, मेरी बिगड़ी बना दो।।10।।

ॐ ह्रूं आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज के चरणों में अनर्घ पद प्राप्ताये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **सौरभ सागर गुरु का, करूँ हमेशा ध्यान।**
भक्त की हर श्वास में, सौरभ सागर नाम।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ - आचार्य श्री सौरभ सागरजी

पिच्छी लेकर नग्न रहे, और केश लोंच जो करते हैं।
तन श्रृंगार रहित वह होकर, बाईस परिषह सहते हैं।।
स्व आत्म कल्याण करे, और पर को मार्ग बताते हैं।
सुलझाते हैं जो मन की ग्रंथियाँ सौरभ सागर जी कहलाते हैं।।

ॐ ह्रूं संस्कार-प्रणेता-आचार्यश्री 108 सौरभ-सागर-जी गुरुदेव-चरण कमलेभ्यो अनर्घ-पद-प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
आचार्य श्री 108 सौरभ सागर चालीसा

मनमंदिर में आन बसे, सौरभ सागर महाराज।
धर्म की राह दिखा दई, और सँवारे काज॥
ऐसे गुरु का यदि रहे, भक्त के सिर पर हाथ।
रोग शोक सब दूर रहे, सुख की हो बरसात॥

सौरभ सागर गुरु हमारे, भक्तों के सब कष्ट निवारे।
ये गुरुवर है अन्तर्यामी, मन की सारी बाते जानी॥
मनमोहक मुस्कान तुम्हारी, छवि तुम्हारी है मनहारी।
चन्द्रप्रभा जी की कोख में आए, शुभ लक्षण उनको दर्शाए॥
उगता हुआ इक सूरज देखा, सर्पो का एक जोड़ा देखा।
इक जंगल में आग भी देखी, हाथी की इक जोड़ी देखी॥
श्री पाल जी को स्वप्न बताए, फल जाना तो बहु हरषाए।
पुत्र रत्न इक घर आएगा, दावानल सा यश पाएगा॥
मस्त हस्ती सम भ्रमण करेगा, सूरज सम जग में चमकेगा।
बाबा की आँखों का तारा, सुरेन्द्र नाम लगता था प्यारा॥
गुरु पुष्प संघ जसपुर आया, इस बालक का भाग जगाया।
अद्भुत प्रतिभा देखी तुझमें, ज्ञानयोगी इक छिपा था तुझमें॥
पिता से तुमको मांग लिया था, मात पिता ने सहर्ष दिया था।
तप अग्नि में तुम्हें तपाया, बारह बरस का समय बिताया॥
क्षमावाणी का शुभ दिन आया, दीक्षा धारुँ ये था भाया।
21 सितम्बर दिन पुण्यशाली, होती गुरु की दीक्षा दिवाली॥
चहुँ दिशि अम्बर बने तुम्हारे, वीतरागी मुद्रा जब धारे।
वाणी तेरी शीतल चन्दन, शीघ्र मिटाती मन का क्रन्दन॥
जिस नगरी भी कदम बढ़ाए, अतिशय अपने खूब दिखाए।
धर्म की ऐसी अलख जगाई, 'संस्कार प्रणेता' उपमा पाई॥
जेल में जो उपदेश सुनाए, मद्य माँस से लोग छुड़ाए।
जब बच्चे उपदेश हैं सुनते, शहद ब्रैड व चमड़ा तजते॥
जिस नगरी भी किया चौमासा, भक्तों के मन भर दी आशा।
निर्बल तुझसे बल पा जाए, वीराने हरियाली पाए॥

जंगल में मंगल करते हो, संकट सारे तुम हरते हो।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, उसकी तो किस्मत है सँवारी॥
एक प्रेरणा तुमसे पाई सौरभाँचल की नींव धराई।
सौरभाँचल एक तीरथ प्यारा, नव जिनग्रह का देख नजारा॥
वृहद आदि पद्मासन प्रतिमा, नीलाम्बर का लगा चँदोवा।
श्रुत स्कन्ध मंदिर बनवाया, द्वादशांग का मान बढ़ाया॥
रत्न चौबीसी मन को भाए, देख देख के हिय हरषाए।
सूनी थी हिसार की नशिया, पर भू भीतर दबी थी निधिया॥
अपने ज्ञान ध्यान से जाना, त्रय जिनदेवा भीतर जाना।
हाथों से मिट्टी खुदवाई 'पार्श्व' 'आदि' 'वीरा' छवि पाई॥
जयकारों से गगन गुँजाए, ज्ञानयोगी गुरुदेव कहाए।
'मनहर पारस क्षेत्र' कहाया, सहस्त्र कलश से न्हवन कराया॥
मंशापूर्ण श्री महावीरा, सेवा भाव जगावे धीरा।
जीवन आशा नाम पुकारा, विकलांगों का बने सहारा॥
ज्ञानी मन चिंतन करता है, हर पल काव्य ग्रन्थ लिखता है।
धर्म गगन में करे विहारा, "सिद्धांत शतक" आगम है प्यारा॥
सब शूलों की सेज उठाते, जैनत्वो का बोध कराते।
पापों के दहकते अंगारे, प्रेरक प्रवचन बुझाते सारे॥
फैशन एक अभिशाप बताया, गर्भपात से सबको बचाया।
जैन विधान सदा करवाते, भक्तों के शुभ भाव जगाते॥
ख्याति लाभ की नहीं कामना, पूजा की भी नहीं चाहना।
विज्ञापन से दूर ही रहते, चर्या सावचेत हो करते॥
आगम के रत्नाकर गुरुवर, शान्त सौम्य छवि सुन्दर गुरुवर।
आशीर्वाद गुरु का फलता, जीवन सहज सरल हो चलता॥
तीर्थराज सम्मेद शिखर है, श्री सौरभांचल का परिसर है।
सहस्र वर्ष प्राचीन है प्रतिमा, अतिशयकारी पारस महिमा॥
10 अप्रैल का शुभ दिन आया, पुष्पगिरी में उत्सव छाया।
रवि पुष्य नक्षत्र कहाया, पुष्पदन्त ने सूरी बनाया॥
देश विदेश से यात्री आये, दृश्य देखकर अति हर्षाये।
सौरभ गुरु को शीश नवाया, धन्य धन्य सौभाग्य जगाया॥

जिस धरती पर कदम बढ़ाए, वो माटी चन्दन बन जाए।
घर घर ज्ञान के दीप जलाए, अज्ञान तिमिर मन का हट जाए।।
दर्शन पा मन पुष्प खिला है, वर्द्धमान का दर्श मिला है।
जब से तेरा साथ मिला है, 'हम-सब' को भगवान मिला है।।

दोहा– सौरभ सागर चालीसा, मन से जो भी ध्याय।
त्याग धर्म बढ़ता रहे, गुरु अनुकंपा पाए।।
गुरुवर तेरे चरण में, नमन हो बारम्बार
पापों का क्षय हो मेरा, भव से हो जाऊँ पार

(9 बार णमोकार मंत्र पढ़ें)

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रूं सौरभ सागर गुरुवे नमः।

आरती आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी की

(लय - तन डोले, मन डोले ...)

सौरभ सागर की, गुण आगर की
शुभ कंचन दीप सजाय के, आज उतारूँ आरतिया
माता चन्द्रप्रभा जी के जाये, श्रीपाल जी के सुत कहलाये
पुष्पदंत जी की बगिया से, ये कोमल पुष्प है आये
सुगन्धित कोमल पुष्प है आये
गुरु की सुरभि से सुरभित होकर कंचन दीप सजाय के ...
गुरु की छवि है इतनी निराली मन को बहुत लुभाती
महिमा गुरुवर के वचनों की जन-जन को हर्षाती
जय गुरुवर जन-जन को हर्षाती
इनके चरणन शत् शत् वन्दन शुभ कंचन दीप सजाय के...
जो भी इनकी शरण में आए, सब संकट कट जाये
हम भी भटके हैं जन्मों से हमको भी पार लगाये
हो जय गुरूवर, हमें भी पार लगाये
यह विनती करें तोसें अरज करें शुभ कंचन दीप ...

कुछ विशेष जाप

1. ॐ ह्रीं नमो अर्हते रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं असिआउसा अप्रतिहत-शक्ति भवतु ह्रीं नमः।
3. ॐ श्रीं ह्रीं अर्हं श्री नमः।
4. ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय सर्वसौख्यं कुरु कुरु नमः।
5. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं असिआउसा अनाहत-विद्यायै णमो अरिहंताणं मम सर्व विघ्न शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं श्रीं वद् वद् वाग्वादिनी ह्रीं नमः।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्टबुद्धिणं।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं।
9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रीं नमः।
10. ॐ ह्रीं ऐं क्लीं ह्रौं नमः।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वो सहिपत्ताणं झ्रों झ्रों नमः।
12. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं ऐं अर्हं मम इष्ट कार्य सिद्धिं कुरु कुरु स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं श्रीं मंशापूर्ण महावीराय नमः रक्ष-रक्ष ह्रूं फट् स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं णमो भगवदो वड्ढमाणस्स रिसहस्स जस्स चक्कं जलंतं गच्छइ आयासं पायालं लोयाणं भूयाणं जूए वा विवादे वा रणंगणे वा थंभणे वा मोहणे वा सव्वजीवसत्ताणं अपराजिदो भवदु मे रक्ख रक्ख स्वाहा वर्धमान-मन्त्रेण सर्वरक्षा भवतु स्वाहा।

जीवन परिचय

आचार्य श्री 108 सौरभ सागर जी महाराज

जन्म : कार्तिक कृष्णपक्ष अष्टमी (गुरुवार)
22 अक्टूबर, 1970 जसपुरनगर (छत्तीसगढ़)

बचपन का नाम : सुरेन्द्र कुमार

पिता का नाम : श्री श्रीपाल जैन

माता का नाम : श्रीमती चन्द्रप्रभा जैन

गृहत्याग : शुक्रवार, 08 अप्रैल, 1983

क्षुल्लक दीक्षा : शुक्रवार, 17 जनवरी, 1986 छत्तरपुर (म.प्र.)

ऐलक दीक्षा : सोमवार, 27 जून, 1988 अंदेश्वर पार्श्वनाथ (राज.)

मुनि दीक्षा : 21 सितम्बर, 1994 इटावा (उत्तर प्रदेश)

दीक्षा गुरु : पुष्पगिरि प्रणेता गणाचार्य श्री पुष्पदंतसागरजी महाराज

आचार्य पद : 10 अप्रैल, 2022 (पुष्पगिरि)

राजकीय अतिथि : झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड

:: विशेष कृति ::

1. सिद्धान्त शतक
2. जैनत्व का बोध
3. धर्म गगन में करें विहार
4. प्रेरक प्रवचन
5. फैशन एक अभिशाप
6. शूलों की सेज
7. दहकते अँगारे
8. आओ लौट चलें
9. पत्थर की मानवाकृति
10. प्रतिमा से प्रतिभा जगे
11. सृजन के द्वार पर
12. हे इन्सान! मत बन तू शैतान
13. जैन शिक्षा भाग-1, 2, 3, 4
14. आराध्य आराधना
15. मंगलं पुष्पदन्ताद्यो
16. जैनाचार संहिता
17. श्रावकाचार संहिता
18. श्रमणाचार संहिता
19. भक्ति-सौरभ
20. अर्हत् चरण सपर्या (जिन-देवार्चना)

विधान

21. श्री भक्तामर स्तोत्र
22. श्री कल्याण मन्दिर
23. स्वयंभू चौबीसी
24. श्री मंशापूर्ण महावीर
25. चौंसठ ऋद्धि सिद्धि
26. आचार्य पुष्पदन्तसागर
27. श्री सम्मेदशिखर
28. माँ जिनवाणी
29. कर्मदहन
30. श्री नवग्रह जिनदेव
31. श्री पुष्पगिरी तीर्थ
32. जैन विधान संग्रह

सौरभांचल प्रकाशन

साहित्य प्रकाशन में ऑन लाईन सहयोग करने के लिए

Scan & Pay

UPI ID : 8448677688@ibl

A/c No.	: 45922900000921
A/c Name	: SAURBHANCHAL PRAKASHAN
Bank	: DCB BANK LIMITED
IFSC Code	: DCBL0000459

8448677688

कृपया इस नम्बर पर (व्हाटसअप)
जमा राशि का स्क्रीन शाट भेजकर रसीद प्राप्त करें।

विधान पुस्तक प्राप्ति स्थल

सौरभांचल प्रकाशन

गणधर गारमेन्टस
IX/842, प्रेम गली नं. 3-सी,
मुलतानी मौहल्ला, सुभाष रोड,
गांधी नगर, दिल्ली-110031

मनोज कुमार जैंन
E-17/9, कृष्णा नगर,
दिल्ली-110051
मो. : 9810056286

श्री 1008 पार्श्वनाथ भगवान ''सौरभाँचल'' (निर्माणाधीन)
श्री सम्मेद शिखर जी मधुबन

श्री 1008 आदिनाथ भगवान ''सौरभाँचल''
गन्नौर (हरियाणा)

श्री 1008 पद्मप्रभु भगवान पुष्पगिरी

संस्कार प्रणेता ज्ञानयोगी
जीवन आशा हॉस्पिटल प्रणेता स्रोत
आचार्य श्री 108 सौरभसागर जी महाराज
सौरभ सागर सेवा संस्थान
JEEVAN ASHA
HOSPITAL & REHABILITATION CENTRE